



हिन्दी भाषा का

व्याकरण

पाद्री बड्डन साहिब का बनाया ।

इस ग्रन्थ का प्रचार बनारस स्कूलबुक सोसाइटी के
व्यय से हुआ ।

AGRA:

PRINTED AT THE SECUNDRA ORPHAN PRESS.

1855.

1st Edition, 2,000 copies. दूसरी बार २००० पुस्तकें

Purnell

1 Hindībhāshā kā
vyākaraṇa
(Grammar of Hindī)
Agra
1855
J. H. Budden

Purnell

f Priyamvada,
by Kedāranāthabhaṭṭa,
Calcutta
A. D. 1856/7.

हिन्दी भाषा का

व्याकरण

पाद्री बड्डुन साहिब का बनाया ।



इस ग्रन्थ का प्रचार बनारस स्कूलबुक सोसाइटी के

व्यय से हुआ ।



AGRA:

PRINTED AT THE SECUNDRA ORPHAN PRESS.

1855.

भूमिका ।

यह ग्रन्थ पहिले अलमोड़े की पाठशाला के विद्यार्थियों के लिये रचा गया । इसके उपरान्त बनारस की कालेज के एक साहिब ने इसका तात्पर्य उपयोगी जान और इसकी कई एक अशुद्ध बातें शुद्ध कर बनारस के स्कूलबुक सोसाइटी के व्यय से इसको कलकत्ते में छपवाया । अब पश्चिम देशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये इसकी २००० पुस्तकों की आज्ञा सर्कार से मिली । इस कारण पूर्वोक्त सोसाइटी इसके निर्माणकर्त्ता ही के द्वारा दोबारा शुद्ध कर और इसकी दूसरी छाप आगरे में करवा अपने व्यय से प्रचार करती है । इस लिये अब इस ग्रन्थ में जो कुछ संदेह पड़े उसका उत्तर कर्त्ता ही से सम्बन्ध रखता है सोसाइटी से नहीं । और जो कोई इसकी अधिक शुद्धता के निमित्त अपना बिचार इसके कर्त्ता पर प्रगट करे तो यह कर्त्ता अपने को अत्यन्त अनुग्रहीत समझेगा ॥

हिन्दी भाषा का व्याकरण।

सूचीपत्र।



हिन्दी भाषा का

व्याकरण ॥

व्याकरण का वर्णन ॥

व्याकरण वह विद्या है जिस से किसी भाषा के बोलने और लिखने की शुद्ध रीति प्रत्यक्ष और निर्णय होती है ॥

इस विद्या के तीन बड़े भाग हैं जो अक्षरों शब्दों और वाक्यों से सम्बन्ध रखते हैं ॥

वह भाग जो अक्षरों से सम्बन्ध रखता है वर्णलिपिज्ञान कहलाता है। उस भाग का नाम जो शब्दसम्बन्धी है शब्दसाधन है। वह भाग जो वाक्यों के विषय में है वाक्यविन्यास के नाम से जाना जाता है ॥

पहिला भाग ॥

वर्णलिपिज्ञान ॥

वर्णलिपिज्ञान में इसका वर्णन होता है कि अक्षरों के आकार और गुण कैसे हैं और किस रीति से उनके मिलने से शब्द बनते हैं ॥

देवनागरी अक्षरों की वर्णमाला में ४८ अक्षर हैं। उन में से पहिले पन्द्रह स्वर कहलाते हैं और शेष व्यञ्जन अर्थात हल। और स्वर का लक्षण यह है कि जिसका उच्चारण विना दूसरे वर्ण की सहायता के हो

सकता है। और व्यञ्जन उसे कहते हैं कि जिसका उच्चारण स्वर की सहायता के विना नहीं हो सकता। उनका स्वरूप यह है ॥

स्वर ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ
ए ऐ ओ औ अं अः ॥

व्यञ्जन ॥

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ।
ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न।
प फ ब भ म। य र ल व श ष स ह ॥

और इन में से छः अक्षरों के नीचे बिन्दी लगाने से उनका उच्चारण पलट जाता है ॥

जैसे अ़ क़ ख़ ग़ ज़ फ़।

परन्तु ये बिन्दीवाले अक्षर केवल फ़ारसी और अ़रबी शब्दों में आते हैं ॥

वर्णमाला के अक्षरों का स्थान और प्रयत्न इन चक्रों से ज्ञात होता है ॥

स्वरचक्र ॥

विवृत और घोष प्रयत्न ॥

स्थान	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	स्थान
कण्ठ	अ	आ	ए	कं-ता-
तालु	इ	ई	ऐ	कं-ता-
ओष्ठ	उ	ऊ	ओ	कं-ओ-
मूर्द्धा	ऋ	ॠ	औ	कं-
दन्त	ऌ			

हलचक्र ॥

वर्ग	अघोष प्रयत्न		घोष प्रयत्न			अघोष		घोष	स्थान
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्प अनुनासिक	महा ऊष्म	महा ऊष्म	अल्प अन्तःस्थ	
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	ह			कण्ठ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ		श	य	तालु
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण		ष	र	मूर्द्धा
तवर्ग	त	थ	द	ध	न		स	ल	दन्त
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म			व	ओष्ठ

आठ अक्षर जब और अक्षरों से मिलते हैं तब उनका स्वरूप पलट जाता है उनको फला कहते हैं ॥

जैसे अक्षर य र ल व न म ऋ लृ ।

फला ्य र्‍ ्र ्ल ्व ्न ्म ृ ॢ ।

बारह स्वर जब व्यञ्जनों के साथ युक्त होके लिखे जाते हैं तब उन का स्वरूप पलट जाता है उनका नाम लगमात है ॥

लगमातों का स्वरूप ॥

(०) ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं :

इन लगमातों को व्यञ्जनों के साथ मिलाने से बारहखड़ी होती है। जैसा क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः। इसी प्रकार ख आदि ले सब व्यञ्जनों की बारहखड़ी जानो ॥

अकेले व्यञ्जनों से शब्द नहीं बनता है परन्तु लगमात समेत व्यञ्जन वा स्वरों को आपस में मिलाने से शब्द बन जाते हैं ॥

मिले हुए व्यञ्जनों के लिखने में आदि के व्यञ्जन का बहुधा पहिला भाग लिखा जाता है। परन्तु ट ठ ड ढ ये चार अक्षर अपने सब स्वरूप से पहिले व्यञ्जन में मिलते हैं। जैसे कट्या पट्टा टिड्डी ॥

दूसरा भाग ॥

शब्दसाधन ॥

शब्दसाधन में शब्दों का प्रकार और शब्द घटना अर्थात विभक्ति और तद्धित और समास और सन्धि वर्णित होती है ॥

शब्द एक लक्षण है जिसके द्वारा बोलने अथवा लिखने की रीति से अपने मन का विचार औरों पर प्रगट करते हैं और जैसे मन के बिचार अनेक प्रकार के हैं तैसे उनके लक्षण भी अनेक प्रकार के हैं ॥

१ शब्दों के प्रकार ॥

व्याकरण की रीति से हिन्दी भाषा में आठ प्रकार के शब्द हैं अर्थात सञ्ज्ञा सर्वनाम गुणवाचक क्रिया क्रियाविशेषण यौगिक पार्श्ववर्ती अमिश्रित ॥

जितनी वस्तु क्या प्रकृति क्या मन की कल्पित सम्पूर्ण सृष्टि में मिलती हैं वा मन के ध्यान में आसकती हैं कि वस्तु हैं उनके नाममात्र को सञ्ज्ञा कहते हैं। जैसा रामचन्द्र मनुष्य उंचाई नगर सत्यता इत्यादि ॥

रचना में जो शब्द सञ्ज्ञा की बदली हो के आता है जिस से सञ्ज्ञा दोहराई न जाय उसका नाम सर्वनाम है। जैसा अपने नाम के बदले में हम इत्यादि कहते हैं और दूसरों के नाम के बदले तू तुम वह उनका तुम्हारा इत्यादि कहते हैं ॥

गुणवाचक उन समस्त शब्दों को कहते हैं जिन से सञ्ज्ञा का गुण कहा जावे। जैसा ज्ञानी मनुष्य सुन्दर वृक्ष उत्तम नगर इत्यादि ॥

क्रिया वह शब्द है जो सञ्ज्ञा अथवा सर्वनाम के उत्तरवर्त्ती होके उसके विषय में किसी गति अथवा कार्य्य को उस रीति से बतलावे जिस से यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होवे। जैसा वह सोता है। घोड़ा चलता है। वृक्ष कट गया है॥

क्रियाविशेषण एक ऐसा शब्द अथवा एक ऐसा वाक्य है जिस से क्रिया का गुण वा समय वा गति वा रीति बतलाई जावे। अर्थात जो कोई पूछे कि कार्य किस रीति से अथवा कब हुआ तो उसका उत्तर क्रियाविशेषण होता है। जैसा उस से अकस्मात भेंट हुई। हम ने अभ्यास करके पाठ सीखा है॥

यौगिक शब्द वह है जिस से प्रत्येक शब्द अथवा वाक्य आपस में संयुक्त होते हैं। जैसा हम और तुम जाएंगे परन्तु यह नहीं जाएगा॥

पार्श्ववर्त्ती ऐसा शब्द है जो सञ्ज्ञा के आदि अथवा अन्त में युक्त होके उसके अर्थ में अन्तर डालता है। जैसा दिन प्रतिदिन। बल बलहीन। पाप पापरहित अथवा निष्पाप। पहाड़ पहाड़ तले इत्यादि॥

अमिश्रित शब्द समस्त ऐसे शब्दों को कहते हैं जिन से आनन्द वा क्रोध वा शोक वा इच्छा वा आश्चर्य अचानक प्रगट होते हैं। जैसे अहो हाय अरे रे हो इत्यादि॥

---

२ शब्दघटना॥

सञ्ज्ञा के विषय में॥

जितना वस्तु क्या प्रकृति क्या मन की कल्पित सम्पूर्ण सृष्टि में मिलती हैं अथवा मन के ध्यान में आसकती हैं कि वस्तु हैं उनके नाम मात्र को सञ्ज्ञा कहते हैं। जैसा मनुष्य रामचन्द्र ऊंचाई मत्यना इत्यादि॥

शब्दार्थ बोध में लिङ्ग सङ्ख्या कारक तीन बात हैं जिनके कारण सञ्ज्ञा के रूप अथवा अर्थ में अन्तर पड़ता है॥

१ लिङ्ग ॥

लिङ्ग वह है जिस से हर एक वस्तु की जाति प्रगट होती है अर्थात कि नर है वा नारी वा और कुछ। इनके तीन नाम हैं पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक ॥

समस्त पुरुषबोधक शब्द क्या व्यञ्जनान्त क्या स्वरान्त सब के सब पुल्लिङ्ग हैं। जैसे मनुष्य हाथी घोड़ा बैल इत्यादि ॥

स्त्रीबोधक शब्द सभी स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे नारी हथिनी घोड़ी गदही इत्यादि ॥

हिन्दी भाषा में नपुंसक लिङ्ग का विशेष नहीं है। परन्तु जितनी सञ्ज्ञा नपुंसकबोधक हैं सो अपने प्रत्यय के अनुसार अथवा भाषा के व्यवहार से पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग गिनी जाती हैं ॥

नपुंसकबोधक सञ्ज्ञा जो व्यञ्जनान्त हैं सो बहुधा पुल्लिङ्ग हैं। जैसा लक्षण वर्णन ज्ञान तप चरित्र इत्यादि ॥

और स्वरान्त बहुधा स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे बुद्धि विधि इच्छा बालू इत्यादि। परन्तु केवल भाषा के व्यवहार पर अच्छी रीति ध्यान करने से इसका पूरा ज्ञान प्राप्त हो सकता है ॥

२ सङ्ख्या ॥

सङ्ख्या दो प्रकार की हैं अर्थात एकवचन। जैसा घोड़ा। बहुवचन। जैसे घोड़े ॥

जो भेद सङ्ख्या के कारण सञ्ज्ञा के रूप में आता है सो सञ्ज्ञा की घटना में सम्पूर्ण वर्णन होगा ॥

३ कारक ॥

सञ्ज्ञा का कारक उसको कहते हैं जब सञ्ज्ञा की कोई अवस्था वा विषय बतलाने के लिये उसका प्रत्यय पलट जाता है ॥

हिन्दी भाषा में आठ कारक हैं अर्थात कर्त्ता कर्म करण सम्प्रदान अपादान सम्बन्ध अधिकरण सम्बोधन ॥

कर्त्ताकारक वह है जो क्रिया को व्याप्त करता है क्योंकि क्रिया का कार्य उसी से किया जाता है। भाषा में इस कारक के दो रूप हैं॥

जब क्रिया का कार्य होता जाता है और सम्पूर्ण नहीं हुआ तब कर्त्ताकारक का विशेष प्रत्यय नहीं है। जैसा बालक मारता है। जब कार्य सम्पूर्ण हुआ तब कर्त्ताकारक में ने प्रत्यय होता है। जैसा बालक ने मारा॥

कर्मकारक वह है जिसको क्रिया का कार्य व्याप्त करता है। और उसी से कार्य के समाचार का सम्पूर्ण वर्णन होता है। उसका लक्षण को है। जैसा बालक पाठ को पढ़ता है॥

करणकारक से क्रिया के कार्य का शस्त्र वा अन्य द्वारा वर्णन होता है। और उसका लक्षण से और करके है। जैसा वह खड्ग से मारता है। उस ने अपनी बुद्धि से यह समझा। उस ने अभ्यास करके पाठ सीखा है॥

सम्प्रदानकारक से ज्ञान होता है कि क्रिया के कार्य का फल किसको प्राप्त होता है। और उसका लक्षण को और के लिये भी है। जैसा गुरू बालक को पुस्तक देता है। वह हमारे लिये घोड़ा ले आवेगा॥

अपादानकारक से कर्त्ता का निकास अर्थात मूल प्रकाशित होता है अर्थात कर्त्ता किस स्थान से निकलके कार्य करता है। और उसका लक्षण से है। जैसा बालक गांव से आया। पत्ता पेड़ से गिरता है॥

सम्बन्धकारक में दो सञ्ज्ञा आपस में सम्बन्धी होती हैं। और उसका लक्षण का के की है। जैसा लड़के की पुस्तक। गुरू की बुद्धि॥

अधिकरणकारक से कर्त्ता का निवास प्रकाशित होता है। अर्थात किस स्थान में होके कर्त्ता कार्य करता है। और उसका लक्षण में है। जैसा वह घर में रहता है। इस में बड़ा अंधेरा है॥

सम्बोधनकारक में उसी का नाम कहा जाता है जिसको हम पुकारते हैं वा जिस से बात करते हैं। और उसके लक्षण अरे अहो हे इत्यादि हैं। जैसा हे मित्र अहो भाई अरे लड़को हे महाराज॥

४ सञ्ज्ञा की घटना अर्थात विभक्ति ॥

सञ्ज्ञा के कारक अनेक प्रकार से रचे जाते हैं। इसलिये जितनी सञ्ज्ञा एक रीति से अपने कारकों को रचती हैं उनको एक ही भाग में कर देती हैं। और उस भाग को विभक्ति कहते हैं ॥

हिन्दी भाषा में शब्दघटना के पांच विभाग हैं ॥

पहिला विभाग व्यञ्जनान्त पुल्लिङ्ग सञ्ज्ञा है जो अपने कारकों को इस रीति से रचती है ॥

	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	बालक बालक ने	बालक बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को बालकन को
करण	बालक से वा करके	बालकों से वा करके
सम्प्रदान	बालक को वा के लिये	बालकों को वा के लिये
अपादान	बालक से	बालकों से वा कन से
सम्बन्ध	बालक का के की	बालकों का वा के की
अधिकरण	बालक में	बालकों में
सम्बोधन	हे बालक	हे बालको ॥

दूसरे विभाग में स्वरान्त पुल्लिङ्ग सञ्ज्ञा है जिसकी रचना इस रीति से है ॥

	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	लड़का लड़के ने	लड़के लड़कों ने
कर्म	लड़के को	लड़कों को-कन को
करण	लड़के से करके	लड़कों से करके
सम्प्रदान	लड़के को के लिये	लड़कों को के लिये
अपादान	लड़के से	लड़कों से
सम्बन्ध	लड़के का के की	लड़कों का के की
अधिकरण	लड़के में	लड़कों में
सम्बोधन	हे लड़के	हे लड़को ॥

परन्तु अनेक आकारान्त पुल्लिङ्ग सञ्ज्ञा ऐसी हैं जिनके प्रत्यय पलट नहीं जाते हैं । जैसे राजा दाता देवता कर्ता इत्यादि ॥

तीसरे विभाग में ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग सञ्ज्ञा है जिसकी रचना इस रीति से है ॥

	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	लड़की लड़की ने	लड़कियां लड़कियों ने
कर्म	लड़की को	लड़कियों को
करण	लड़की से करके	लड़कियों से करके
सम्प्रदान	लड़की को के लिये	लड़कियों को के लिये
अपादान	लड़की से	लड़कियों से
सम्बन्ध	लड़की का के की	लड़कियों का के की
अधिकरण	लड़की में	लड़कियों में
सम्बोधन	हे लड़की	हे लड़कियो

चौथे विभाग में आकारान्त स्त्रीलिङ्ग सञ्ज्ञा है जिसकी रचना इस रीति से है॥

	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	माता माता ने	माता माता ने माताओं ने
कर्म	माता को	माताओं को
करण	माता से करके	माताओं से करके
सम्प्रदान	माता को के लिये	माताओं को के लिये
अपादान	माता से	माताओं से
सम्बन्ध	माता का के की	माताओं का के की
अधिकरण	माता में	माताओं में
सम्बोधन	हे माता	हे माताओ

पांचवें विभाग में व्यञ्जनान्त स्त्रीलिङ्ग सञ्ज्ञा है जिसकी रचना इस रीति से है ॥

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	बात बात ने	बातें बातों ने
कर्म	बात को	बातों को
करण	बात से करके	बातों से करके
सम्प्रदान	बात को के लिये	बातों को के लिये
अपादान	बात से	बातों से
सम्बन्ध	बात का के की	बातों का के की
अधिकरण	बात में	बातों में

२ सर्वनाम के विषय में॥

रचना में जो शब्द सञ्ज्ञा के बदले होके आता है कि जिस से सञ्ज्ञा दोहराई न जाय उसका नाम सर्वनाम है। जैसा अपने नाम के बदले में हम इत्यादि कहते हैं और दूसरों के नाम के बदले तू तुम वह यह इत्यादि कहते हैं॥

सर्वनाम चार प्रकार का है। नामवाचक सम्बन्धवाचक प्रश्नवाचक और अधिकार वा गौरवसहित॥

नामवाचक सर्वनाम तीन प्रकार का है। अस्मत्कर्त्ता युष्मत्कर्त्ता नामकर्त्ता॥

अस्मत्कर्त्ता नामवाचक सर्वनाम बोलनेवाले के नाम के बदले होके आता है। उसकी घटना इस रीति से है॥

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	मैं मैं ने	हम हम ने
कर्म	मुझ को	हम को हमें
करण	मुझ से करके	हम से करके
सम्प्रदान	मुझ को मेरे लिये	हम को हमें हमारे लिये
अपादान	मुझ से	हम से
सम्बन्ध	मेरा रे री	हमारा रे री
अधिकरण	मुझ में	हम में

पुरुषन्कर्ता उसके नाम के बदले आता है जिस से बात किई जाती है। उसकी घटना इस प्रकार से है॥

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	तू तू ने	तुम तुम ने
कर्म	तुझ को तुझे	तुम को तुम्हें
करण	तुझ से करके	तुम से तुम करके
सम्प्रदान	तुझ को तेरे लिये	तुम को तुम्हारे लिये
अपादान	तुझ से	तुम से
सम्बन्ध	तेरा रे री	तुम्हारा रे री
अधिकरण	तुझ में	तुम में

नामकर्ता सर्वनाम उस सञ्ज्ञा के बदले आता है जिसके विषय में कुछ वर्णन किया जाता है। वह सर्वनाम दो प्रकार का है निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक॥

निश्चयवाचक सर्वनाम दो हैं यह और वह॥

यह सर्वनाम उस सञ्ज्ञा के बदले आता है जो समीप है और उस का रूप इस प्रकार से होता है। यह के स्थान में इस और वह के स्थान में उस आदेश होता है जब कि कोई कारक का चिन्ह परे रहता है॥

	एकवचन।	बहुवचन
कर्ता	यह इस ने	ये इन्हों ने
कर्म	इस को इसे	इन को इन्हों को इन्हें
करण	इस से इस करके	इन करके इन्हों करके इन से इन्हों से
सम्प्रदान	इस के लिये इस को	इन के लिये इन्हों के लिये इन को इन्हों को
अपादान	इस से	इन से इन्हों से
सम्बन्ध	इस का के की	इन का इन्हों का के की
अधिकरण	इस में	इन में इन्हों में

वह सर्वनाम उस सञ्ज्ञा के बदले आता है जो दूर है और उस का रूप इस रीति से होता है ॥

	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	वह उस ने	वे उन्हों ने
कर्म	उस को उसे	उन को उन्हों को उन्हें
करण	उसे उस करके	उन से उन्हों से उन करके उन्हों करके
सम्प्रदान	उस के लिये उस को	उन के लिये उन्हों के लिये उन को उन्हों को
अपादान	उस से	उन से उन्हों से
सम्बन्ध	उस का के की	उन का के की उन्हों का के की
अधिकरण	उस में	उन में उन्हों में

ये दोनों सर्वनाम निश्चय करके बतलाते हैं कि इसी वस्तु का वर्णन किया जाता है । और इस लिये इनका नाम निश्चयवाचक है ॥

अनिश्चयवाचक सर्वनाम ठीक नहीं बतलाता है कि किस वस्तु का वर्णन किया जाता है । जैसा कोई । और इसकी घटना इस रीति से है ॥

	एकवचन ।	
कर्ता	कोई किसी ने	किसू ने
कर्म	सिकी को	किसू को
करण	किसी से किसी करके	किसू से किसू करके
सम्प्रदान	किसी के लिये किसी को	किसू के लिये किसू को
अपादान	किसी से	किसू से
सम्बन्ध	किसी का के की	किसू का के की
अधिकरण	किसी में	किसू में

कुछ शब्द भी अनिश्चयवाचक है । परंतु इसको आदेश नहीं होता और सामान्यतः इसके परे विभक्ति आती है । जैसे किसी ने कहा कि

कुछ मिला कुछ के लिये जाते हैं कुछ से काम न चलेगा इत्यादि ॥

सम्बन्धवाचक सर्वनाम वह है जो किसी सञ्ज्ञा के साथ जो वाक्य में उपस्थित होता है कुछ वर्णन मिलाता है। जैसा एक मनुष्य जो बड़ा लम्बा था सो मेरे पास आया। अथवा जो सञ्ज्ञा उपस्थित न होवे तो सर्वनाम ही प्रथम लिखा जाता है और उसका सम्बन्धी सो शब्द सञ्ज्ञा के बदले आता है। जैसा जो बड़ा लम्बा था सो मेरे पास आया। उस की घटना इस रीति से है ॥

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	सो तिस ने	सो तिन्हों ने
कर्म	तिस को तिसे	तिन को तिन्हों को तिन्हें
करण	तिस से तिस करके	तिन से तिन्हों से तिन करके तिन्हों करके
सम्प्रदान	तिस के लिये तिस को	तिन के लिये तिन्हों के लिये तिन को तिन्हों को
अपादान	तिस से	तिन से तिन्हों से
सम्बन्ध	तिस का के की	तिन का के की तिन्हों का के की
अधिकरण	तिस में	तिन में तिन्हों में

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	जो जिस ने	जो जिन्हों ने
कर्म	जिस को जिसे	जिनको जिन्हों को जिन्हें
करण	जिस से जिस करके	जिन से जिन्हों से जिन करके जिन्हों करके
सम्प्रदान	जिस के लिये जिस को	जिन के लिये जिन्हों के लिये जिन को जिन्हों को
अपादान	जिस से	जिन से जिन्हों से
सम्बन्ध	जिस का के की	जिन का के की जिन्हों का के की
अधिकरण	जिस में	जिन में जिन्हों में

प्रश्नवाचक सर्वनाम दो हैं कौन और क्या। कौन इस शब्द की घटना इस प्रकार की है॥

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	कौन किस ने	कौन किन्हों ने
कर्म	किस को किसे	किन को किन्हों को किन्हें
करण	किस से किस करके	किन से किन्हों से किन करके किन्हों करके
सम्प्रदान	किस के लिये किस को।	किन के लिये किन्हों के लिये किन को किन्हों को
अपादान	किस से	किन से किन्हों से
सम्बन्ध	किस का के की	किन का के की किन्हों का के की
अधिकरण	किस में	किन में किन्हों में

और क्या इस पद की घटना नहीं होती है॥

अधिकार वा गौरवसहित सर्वनाम एक है। जैसा आप। और इस का स्वरूप सब कारकों में समान रहता है। जब यह सर्वनाम युष्मद् के सङ्ग आता है तब गौरवसहित है। जैसा आप आइये। जब अस्मद् वा नाम कर्ता के साथ आता है तब अधिकारवाचक कहलाता है। परन्तु उसका अर्थ अवधारण है। जैसा हम आप करेंगे वह आप आयगा॥

सर्वनाम से एक प्रकार का गुणवाचक शब्द निकलता है जो सर्वनामीय गुणवाचक कहलाता है। जैसा मेरा हमारा तेरा तुम्हारा अपना जैसा कौनसा कैसा इत्यादि॥

३ गुणवाचक के विषय में।

गुणवाचक उन सब शब्दों को कहते हैं जिन से वस्तु का गुण कहाजाय। जैसा ज्ञानी मनुष्य सुन्दर वृक्ष उत्तम पुरुष पीत वस्त्र निर्मल जल इत्यादि॥

बहुधा गुणवाचक के रूप पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में तुल्य होते हैं। जैसे ज्ञानी चञ्चल इत्यादि॥

अनेक पुल्लिङ्ग शब्द ई प्रत्यय के आने से स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं। जैसा सुन्दर सुन्दरी भला भली श्रीमन श्रीमती इत्यादि॥

गुणवाचक की सङ्ख्या और कारक का वही व्यवहार है जो सञ्ज्ञा के विषय में वर्णन हो चुका है॥

गुणवाचक के तीन भाव हो सकते हैं जो दो प्रकार से रचे जाते हैं। पहिला पार्श्ववर्ती से लगाने से। जैसा अच्छा इस से अच्छा सब से अच्छा। दूसरा तर और तम प्रत्यय होने से। जैसा श्रिष्ट श्रिष्टतर श्रिष्टतम॥

४ क्रिया के विषय में।

क्रिया वह शब्द है जो सञ्ज्ञा अथवा सर्वनाम के उत्तरवर्ती होके उस के विषय में कोई गति अथवा कार्य उस रीति से बतावे कि जिस से यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होवे। जैसा वह सोता है घोड़ा चलता है वृक्ष कट गया है॥

१ क्रिया के प्रकार।

क्रिया तीन प्रकार की है अकर्मक सकर्मक और प्रेरणार्थ॥

अकर्मक क्रिया वह है जिसका कार्य वा गति कर्ता ही में स्थिर रहता है और जिस में कर्मकारक नहीं रहता। जैसा होना सोना चलना इत्यादि॥

सकर्मक क्रिया वह है जिसका कार्य कर्ता से निकलकर दूसरे पर लगता है। जैसा मारना देना करना इत्यादि॥

प्रेरणार्थ क्रिया सकर्मक क्रिया से निकलती है। और उसका अर्थ यह है कि एक कर्ता दूसरे की प्रेरणा करके इसी से कार्य कराता है। जैसा मरवाना दिलाना करवाना इत्यादि॥

२ क्रिया के वाच्य।

सकर्मक और प्रेरणार्थ क्रिया के दो वाच्य हैं एक कर्तृवाच्य। जैसे मारना मरवाना। दूसरा कर्मणिवाच्य। जैसे माराजाना॥

अकर्मक क्रिया का कर्मणिवाच्य नहीं है परंतु बहुधा उस से सकर्मक क्रिया निकल सकती है। जैसे चलना चलाना सोना सुलाना ॥

ऐसी क्रियाओं के कर्तृवाच्य और कर्मणिवाच्य दोनों हो सकते हैं। जैसे चलाना चलाया जाना सुलाना सुलाया जाना इत्यादि ॥

३ क्रिया के नियम।

क्रिया का नियम वह है जिस से उसके कार्य की रीति प्रगट होती है अर्थात् सचमुच उपस्थित हुई। अथवा अनुमान की रीति से अन्तर्गत कल्पी जाती है। किम्बा उसकी आज्ञा वा बिनती हुई। अथवा कर्ता और काल विशेष विना निष्केवल धातु का अर्थ कहा जाता है ॥

इन चार रीतियों के अनुसार चार नियम हैं। जैसे भावमात्रवाचक अनुमत्यर्थ स्वार्थ और आशंसार्थ ॥

भावमात्रवाचक नियम से कर्ता वा काल का वर्णन नहीं होता है। केवल धातु का अर्थ बतलाया जाता है। जैसे मारना मारता मारके ॥

अनुमत्यर्थ नियम से आज्ञा वा बिनती प्रगट होती है। जैसे इस काम को करो हम को दीजिये ॥

स्वार्थ नियम से प्रगट होता है कि कार्य वा गति सचमुच उपस्थित हुई। अथवा पूछा जाता है कि कार्य हुआ वा नहीं। जैसे मैं मारता हूं वह मारेगा क्या तुम ने नहीं मारा है ॥

आशंसार्थ नियम से ज्ञान होता है कि कार्य वा गति उपस्थित हुई बात की रीति से नहीं परंतु अनुमान अथवा इच्छा वा शक्ति की रीति से समझी और कही जाती है। जैसे जो हम मारते तो तुम दुख पाते और जो मैं चाहूं तो मारूं ॥

४ क्रिया की दशा।

क्रिया की दशा से तीन बातें प्रगट होती हैं ॥

प्रथम काल अर्थात भूत वा भविष्यत वा वर्तमान ॥

द्वितीय कार्य की दशा वा गति अर्थात अपूर्ण वा सम्पूर्ण । इन दो बातों के मिलाने से छ दशा बन जाती हैं इस रीति से ॥

भूतकाल -- { अपूर्ण कार्य
सम्पूर्ण कार्य

भविष्यत्काल { अपूर्ण कार्य
सम्पूर्ण कार्य

वर्तमानकाल { अपूर्ण कार्य
सम्पूर्ण कार्य

जाना चाहिये कि ये छ दशा सब की सब निष्केवल स्वार्थ नियम में मिलती हैं ॥

तृतीय क्रिया की दशा में कर्ता का विशेष । अर्थात पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग एकवचन वा बहुवचन अस्मत्कर्ता वा युष्मत्कर्ता वा नामकर्ता ॥

---

५ क्रिया की घटना ।

क्रिया के नियम और दशा उसी क्रिया के धातु में अनेक प्रकार के प्रत्यय लगाने से रचे जाते हैं ॥

क्रिया का धातु वह है जो समस्त नियम और दशाओं में अटल और निरन्तर रहता है । जैसे मारना मारने मारेंगे इत्यादि । इन सब शब्दों में मार शब्द निरन्तर हैं । इसी कारण से क्रिया का धातु हुआ ॥

जाना चाहिये कि घटना के विषय में दो प्रकार की क्रिया हैं यथार्थ क्रिया और अयथार्थ क्रिया ॥

यथार्थ क्रिया वह है जिसकी घटना समस्त दशाओं में क्रम की रीति से होवे । जैसे मारना इत्यादि ॥

अयथार्थ क्रिया वह है जिसकी घटना क्रम की रीति से न होवे परन्तु अक्षरों की वृद्धि अथवा न्यूनता अथवा अन्तर से होवे । जैसे होना लेना करना इत्यादि ॥

समस्त क्रियाओं की घटना होना क्रिया की प्रत्येक दशा के प्रत्यय होने से होती है। इस लिये इसकी घटना और एक यथार्थ क्रिया मारना कर्तृवाच्य की घटना एकी साथ वर्णन किई जायगी।

मारने का धातु मार।
होने का धातु हो।

---

१ भावमात्रवाचक नियम।

भावमात्रवाचक नियम की दो दशा हैं। साञ्ज्ञिक क्रिया और असमापिका क्रिया॥

साञ्ज्ञिक क्रिया धातु में ना प्रत्यय होने से बनती है। जैसे हो होना मार मारना। और यह कार्य का नाम मात्र होके सञ्ज्ञा के तुल्य कारकों के अधीन है॥

असमापिका क्रिया दो प्रकार की है गुणवाचक और क्रियाविशेषण॥

गुणवाचक क्रिया दो प्रकार की है अपूर्ण और सम्पूर्ण॥

अपूर्ण गुणवाचक क्रिया के धातु में ता प्रत्यय होने से बनता है। जैसा मारता होता॥

सम्पूर्ण गुणवाचक क्रिया के धातु में आ प्रत्यय होने से बनता है। जैसा मारा हुआ। ये दोनों रूप गुणवाचक के तुल्य कारक और सङ्ख्या और लिङ्ग के अधीन हैं॥

क्रियाविशेषण धातु में कर और के प्रत्यय होने से बनता है। जैसा मारकर मारके होकर होके॥

---

२ अनुमत्यर्थ नियम।

अनुमत्यर्थ नियम की एकी दशा है अर्थात धातु ही निरन्तर रहता है। जैसे मार और हो। परन्तु बहुवचन में ओ प्रत्यय होता है। जैसा मारो होओ और गौरवसहित मारिये। अर्थात धातु से इ ये प्रत्यय होने से बनता है॥

३. स्वार्थ नियम ।

इस नियम की रचना में तीनों काल होना क्रिया के अनेक रूपों के लगने से प्रगट होते हैं । अर्थात भूतकाल था भविष्यत्काल हूंगा होगा । वर्तमानकाल हूं हैं ॥

कार्य की दशा अर्थात अपूर्ण है वा सम्पूर्ण असमापिका क्रिया गुणवाचक से प्रगट होती है । स्वार्थ नियम की छ दशा इन दो बातों के मिलाने से रची जाती हैं इस रीति से ॥

भूतकाल --	अपूर्ण कार्य	था	मारता था
	सम्पूर्ण कार्य	हुआ था	मारा था
भविष्यत्काल	अपूर्ण कार्य	हूंगा	मारूंगा
	सम्पूर्ण कार्य	हुआ हूंगा	मारा होगा
वर्तमानकाल	अपूर्ण कार्य	हूं	मारता हूं
	सम्पूर्ण कार्य	हुआ हूं	मारा है

यद्यपि व्याकरण के अनुसार भविष्यत् की सम्पूर्ण दशा उस रीति से रचनी चाहिये जिस रीति से ऊपर वर्णन हुआ। अर्थात हुआ हूंगा । मारा होगा तथापि बोलचाल में यह दशा बहुधा चुकना क्रिया से रची जाती है । अर्थात हो चुकूंगा । मार चुकूंगा । इस कारण क्रिया की घटना में इस ही रीति से लिखा जायगा ॥

जाना चाहिये कि इस नियम के विषय में अकर्मक और सकर्मक क्रिया का अन्तर है । परन्तु यह अन्तर निष्केवल उन दशाओं में होता है जिन से कार्य के सम्पूर्ण होने का समाचार मिलता है । ऐसी दशाओं में सकर्मक क्रिया अपने कर्ता को कर्ताकारक के दूसरे रूप में कर देती है जिसका लक्षण ने है । जैसा बालक ने मारा है ॥

अकर्मक क्रिया उन्हीं दशाओं में अपने कर्ता को कर्ताकारक के पहिले रूप में कर देती है । जैसा बालक चला है मैं सोया हूं । इस विषय में सकर्मक क्रिया लाना भूलना लड़ना बकना बोलना अकर्मक क्रिया के तुल्य हैं ॥

४ आशंसार्थ नियम ।

इस नियम में भूत और वर्तमान काल में तुल्य ही रूप होते हैं क्योंकि यद्यपि भूत काल का व्यापार अभिप्रेत है तथापि वर्तमान ही काल में उस कर्म की भावना होती है इस लिये क्रिया की दशा भी वर्तमान की होगी ॥

भूत और वर्तमानकाल	अपूर्ण	होता	मारता
	सम्पूर्ण	हुआ होता	मारा होता
भविष्यत्काल ------	अपूर्ण	होऊं	मारूं
	सम्पूर्ण	हुआ होऊं	मारा होऊं

अब होना क्रिया की सम्पूर्ण घटना लिखी जाती है ॥

५ होना क्रिया की घटना ।

धातु हो ।

भावमात्रवाचक नियम ।

साज्ञिक क्रिया ।

होना होने को का के की से में इत्यादि ॥

असमापिका क्रिया ।

गुणवाचक	अपूर्ण	होता	-ते	-ती	इत्यादि ।
	सम्पूर्ण	हुआ	-ए	-ई	इत्यादि ।
क्रियाविशेषण		होकर		होके	

अनुमत्यर्थनियम ।

एकवचन ।	बहुवचन ।	गौरवसहित ।
हो	होओ	हूजिये

स्वार्थनियम ।

भूतकाल ।

	अपूर्ण ।				सम्पूर्ण ।			
	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	था	थी	थे	थीं	हुआ था	हुई थी	हुए थे	हुई थीं

भविष्यत्काल ।

अस्मद्	हूंगा	-गी	होंगे	-गी	हो चुकूंगा	-गी	हो चुकेंगे	-गी
युष्मद्	होगा	-गी	होगे	-गी	हो चुकेगा	-गी	हो चुकोगे	-गी
नाम	होगा	-गी	होंगे	-गी	हो चुकेगा	-गी	हो चुकेंगे	-गी

वर्तमानकाल ।

अस्मद्	हूं	हैं	हुआ हूं	-ई हूं	हुए हैं	-हुई हैं
युष्मद्	है	हो	हुआ है	-ई है	हुए हो	-हुई हो
नाम	है	हैं	हुआ है	-ई है	हुए हैं	-हुई हैं

आशंसार्थनियम ।

भूत और वर्तमानकाल ।

अस्मद् युष्मद् नाम	होता -ती	होते	होतीं	हुआ होता -ई-ती	हुए होते -ई -तीं

भविष्यत्काल ।

अस्मद्	होऊं	होवें	हो चुकूं	हो चुकें
युष्मद्	होवे	होओ	हो चुके	हो चुको
नाम	होवे	होवें	हो चुके	हो चुकें

६ मारना क्रिया की कर्तृवाच्य की घटना ॥

अब एक यथार्थ सकर्मक क्रिया अर्थात मारना कर्तृवाच्य की सम्पूर्ण रचना लिखी जाती है ॥

धातु मार

भावमात्रवाचक नियम ।

शाब्दिक क्रिया ।

मारना मारने को का के की से में इत्यादि ।

असमापिका क्रिया ।

गुणवाचक	अपूर्ण	मारता	-ते	-ती ।
	सम्पूर्ण	मारा	-रे	-री ।
क्रियाविशेषण		मारकर		मारके ।

अनुमत्यर्थनियम ।

एकवचन ।	बहुवचन ।	गौरवसहित ।
मार	मारो	मारिये

स्वार्थनियम ।

भूतकाल ।

	अपूर्ण ।				सम्पूर्ण ।			
	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	मारता था	-ती थी	मारते थे	-ती थीं	मारा था	-री थी	मारे थे	-री थीं

भविष्यत्काल ।

	अपूर्ण ।				सम्पूर्ण ।			
	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद्	मारूंगा	-गी	मारेंगे	-गी	मारचुकूंगा	-गी	मारचुकेंगे	-गी
युष्मद्	मारेगा	-गी	मारोगे	-गी	मारचुकेगा	-गी	मारचुकोगे	-गी
नाम	मारेगा	-गी	मारेंगे	-गी	मारचुकेगा	-गी	मारचुकेंगे	-गी

वर्तमानकाल ।

अपूर्ण ।

अस्मद्	मारता हूं	-ती हूं	मारते हैं	-ती हैं
युष्मद्	मारता है	-ती है	मारते हो	-ती हो
नाम	मारता है	-ती है	मारते हैं	-ती हैं

सम्पूर्ण ।

अस्मद्, युष्मद्, नाम	मारा है	-री है	मारा है	मारी हैं

आशंसार्थनियम ।

भूत और वर्तमानकाल ।

	अपूर्ण ।				सम्पूर्ण ।				
अस्मद्, युष्मद्, नाम	मारता	-ती	मारते	-ती	मारा होता	-री होती	मारे होते	-री	-रीं

भविष्यत्काल ।

अस्मद्	मारूं	मारें	मारचुकूं	मारचुकें
युष्मद्	मारे	मारो	मारचुके	मारचुको
नाम	मारे	मारें	मारचुके	मारचुकें

० जाना क्रिया की घटना ॥

जिस रीति से कि कर्तृवाच्य क्रिया की रचना होना क्रिया के अनेक रूप लगाने से होती है उसी रीति से कर्मणिवाच्य क्रिया की रचना जाना क्रिया के द्वारा से होती है। इस लिये अब जाना क्रिया की सम्पूर्ण रचना लिखी जाती है॥

धातु जा।

भावमात्रवाचक नियम।

साज्ञिक क्रिया।

जाना जाने को का के की से में इत्यादि।

असमापिका क्रिया।

गुणवाचक	अपूर्ण	जाता	-ते	-ती।	
	सम्पूर्ण	गया	-ये	-ई	इत्यादि।
क्रियाविशेषण		जाकर		जाके।	

अनुमत्यर्थनियम।

एकवचन।	बहुवचन।	गौरवसहित।
जा	जाओ	जाइये

स्वार्थनियम।

भूतकाल।

	अपूर्ण।				सम्पूर्ण।			
	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	जाता था	-ती थी	जाते थे	-ती थीं	गया था	-ई थी	गये थे	-ई थीं

भविष्यत्काल ।

	अपूर्ण ।				सम्पूर्ण ।			
	एकवचन ।		बहुवचन ।		एकवचन ।		बहुवचन ।	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद्	जाऊंगा	-गी	जायंगे	-गी	जाचुकूंगा	-गी	जाचुकेंगे	-गी
युष्मद्	जायगा	-गी	जाओगे	-गी	जाचुकेगा	-गी	जाचुकोगे	-गी
नाम	जायगा	-गी	जायंगे	-गी	जाचुकेगा	-गी	जाचुकेंगे	-गी

वर्तमानकाल ।

अस्मद्	जाता हूं	-ती हूं	जाते हैं	-ती हैं	गया हूं	-ई हूं	गये हैं	-ई -हैं
युष्मद्	जाता है	-ती है	जाते हो	-ती हो	गया है	-ई है	गये हो	-ई हो
नाम	जाता है	-ती है	जाते हैं	-ती हैं	गया है	-ई है	गये हैं	-ई हैं

आशंसार्थनियम ।

भूत और वर्तमानकाल ।

अस्मद्
युष्मद् } जाता -ती जाते जातीं -- गया होता -ई ती गये होते -ई तीं
नाम

भविष्यत्काल ।

अस्मद्	जाऊं	"	जावें	"	जाचुकूं	"	जाचुकें	"
युष्मद्	जाय	"	जाओ	"	जाचुके	"	जाचुको	"
नाम	जावे	"	जावें	"	जाचुके	"	जाचुकें	"

D

८ मारना क्रिया की कर्मणिवाच्य की घटना ।

अब सकर्मक क्रिया मारना की कर्मणिवाच्य की रचना लिखी जाती है ॥

भावमात्रवाचक नियम ।

शाब्दिक क्रिया ।

मारा जाना मारे जाने को का के की से में इत्यादि ।

असमापिका क्रिया ।

गुणवाचक	अपूर्ण	मारा जाता -ते -ती इत्यादि ।
	सम्पूर्ण	मारा हुआ -रे -ए -री -ई इत्यादि ।
क्रियाविशेषण		मारा जाकर मारा जाके

अनुमत्यर्थ नियम ।

एकवचन ।	बहुवचन ।	गौरवसूचक ।
मारा जा	मारे जाओ	मारे जाइये

स्वार्थनियम ।

भूतकाल ।

अपूर्ण

	एकवचन ।		बहुवचन ।	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	मारा जाता था	-री -ती थी	मारे जाते थे	मारी जाती थीं

सम्पूर्ण ।

	एकवचन ।		बहुवचन ।	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	मारा गया था	मारी गई थी	मारे गये थे	मारी गई थीं

भविष्यत्काल

अपूर्ण ।

अस्मद्	मारा जाऊंगा -री -गी	मारे जायंगे -री -गी
युष्मद्	मारा जायगा -री -गी	मारे जाओगे -री -गी
नाम	मारा जायगा -री -गी	मारे जायंगे -री -गी

सम्पूर्ण ।

अस्मद्	मारा जा चुकूंगा -री -गी	मारे जा चुकेंगे -री -गी
युष्मद्	मारा जा चुकेगा -री -गी	मारे जा चुकोगे -री -गी
नाम	मारा जा चुकेगा -री -गी	मारे जा चुकेंगे -री -गी

वर्तमानकाल ।

अपूर्ण ।

अस्मद्	मारा जाता हूं -री -ती	मारे जाते हैं -री -ती
युष्मद्	मारा जाता है -री -ती	मारे जाते हो -री -ती
नाम	मारा जाता है -री -ती	मारे जाते हैं -री -ती

सम्पूर्ण ।

अस्मद्	मारा गया हूं -री -ई	मारे गये हैं -री -ई
युष्मद्	मारा गया है -री -ई	मारे गये हो -री -ई
नाम	मारा गया है -री -ई	मारे गये हैं -री -ई

आशंसार्थनियम ।

भूत और वर्तमानकाल ।

अपूर्ण ।

	एकवचन । पुं	स्त्री	बहुवचन । पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	मारा जाता	-री -ती --	मारे जाते	-री -तीं

सम्पूर्ण ।

अस्मद् युष्मद् नाम } मारा गया होता -री -ई -ती -- मारे गये होते -री -ई -तीं

भविष्यत्काल ।

अपूर्ण ।

अस्मद्	मारा	जाऊं -री	मारे	जावें	-री
युष्मद्	मारा	जाये -री	मारे	जाओ	-री
नाम	मारा	जाय -री	मारे	जायं	-री

सम्पूर्ण ।

अस्मद्	मारा जा चुकूं	-री	मारे जा चुकें	-री
युष्मद्	मारा जा चुके	-री	मारे जा चुको	-री
नाम	मारा जा चुके	-री	मारे जा चुकें	-री

६ चलना क्रिया की घटना ।

अब एक यथार्थ अकर्मक क्रिया अर्थात चलना की रचना लिखी जाती है ॥

धातु चल ।

भावमात्रवाचक नियम ।

साञ्ज्ञिक क्रिया ।

चलना चलने को का के की से में इत्यादि ।

असमापिका क्रिया।

गुणवाचक { अपूर्ण चलता -ते -ती।
सम्पूर्ण चला -ले -ली।

क्रियाविशेषण चलकर चलके।

अनुमत्यर्थनियम।

एकवचन।	बहुवचन।	गौरवर्थहित।
चल	चलो	चलिये

स्वार्थनियम।

भूतकाल।

	अपूर्ण।				सम्पूर्ण।			
	एकवचन।		बहुवचन।		एकवचन।		बहुवचन।	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	चलता था	-ती थी	चलते थे	-ती थीं	चला था	-ली थी	चले थे	-ली थीं

भविष्यत्काल।

अस्मद्	चलूंगा -गी	चलेंगे -गी	चल चुकूंगा -गी	चल चुकेंगे -गी
युष्मद्	चलेगा -गी	चलोगे -गी	चल चुकेगा -गी	चल चुकोगे -गी
नाम	चलेगा -गी	चलेंगे -गी	चल चुकेगा -गी	चल चुकेंगे -गी

वर्तमानकाल।

अस्मद्	चलता हूं -ती	चलते हैं -ती	चला हूं -ली	चले हैं -ली
युष्मद्	चलता है -ती	चलते हो -ती	चला है -ली	चले हो -ली
नाम	चलता है -ती	चलते हैं -ती	चला है -ली	चले हैं -ली

आर्थसार्थनियम ।

भूत और वर्तमानकाल ।

	अपूर्ण ।				सम्पूर्ण ।			
	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
अस्मद् युष्मद् नाम	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
	चलता	-ती	चलते	-तीं	चल चुकता	-ती	चल चुकते	-तीं

भविष्यत्काल ।

अस्मद्	चलूं	"	चलें	"	चल चुकूं	"	चल चुकें	"
युष्मद्	चले	"	चलो	"	चल चुके	"	चल चुको	"
नाम	चले	"	चलें	"	चल चुके	"	चल चुकें	"

जिन क्रियाओं के धातु स्वरान्त हैं उनके सम्पूर्ण गुण वाचक धातुओं में या प्रत्यय होने से बनते हैं । और इस विषय में प्रेरणार्थ क्रिया भी उनके तुल्य हैं । जैसे सोना गुणवाचक सोया दिलाना दिलाया । और उनकी दशा इसी क्रम के अनुसार रची जाती हैं । जितनी अयथार्थ क्रिया हैं सब अपने सम्पूर्ण गुणवाचक को इसी रीति से कल्पती हैं । जैसे देना दिया लेना लिया करना किया इत्यादि ॥

५ क्रियाविशेषण के विषय में ।

क्रियाविशेषण एक ऐसा शब्द अथवा एक ऐसा वाक्य है जिस से क्रिया का गुण वा समय वा गत वा रीति बतलाई जावे । अर्थात जो कोई पूछे कि कार्य किस रीति से अथवा कब हुआ तब उस का उत्तर क्रियाविशेषण ही होगा । जैसे वह शीघ्र आया । उस से अकस्मात भेट हुई । हम ने अभ्यास करके पाठ सीखा है ॥

क्रियाविशेषण अनेक प्रकार के हैं ।

१	कालवाचक जैसे	जैसा तब जब वहीं झट अचानक इत्यादि ।
२	स्थानवाचक	यहां वहां दहने बायें ऊपर नीचे इत्यादि ।
३	भाववाचक	बहुत अधिक तनिक इत्यादि ।
४	गुणवाचक	शीघ्र धीरे निरन्तर सनातन अकस्मात ।
५	निषेधवाचक	नहीं ना मत इत्यादि ।

परंतु बहुधा एक वाक्य जिस के अन्त में असमापिका क्रियाविशेषण अथवा से शब्द परवर्ती होता है वह भी क्रियाविशेषण की रीति आता है । जैसा बड़ा यत्न करके बड़ी चतुराई से इत्यादि ॥

६ यौगिक शब्द के विषय में ।

यौगिक शब्द वह है जिस से प्रत्येक शब्द अथवा वाक्य आपस में संयुक्त होते हैं । जैसे परंतु इस लिये इत्यादि ॥

यौगिक शब्द अनेक प्रकार के हैं ।

१	मेलवाचक जैसे	और अरु एवं भी ।
२	भिन्नवाचक	अथवा वा क्या कि परंतु किंवा फिर भी तथापि अर्थात जानो ।
३	तुल्यवाचक	यथा तथा जिस रीति से उस रीति से ।
४	अनुमानवाचक	यद्यपि यदि कदाचित जो ।
५	परिणामवाचक	इस लिये यों इसी से तो नहीं तो ।
६	कारणवाचक	कि जिस से इस कारण क्योंकि जिस लिये जिस से ।
७	कालवाचक	जभी जिस समय फिर इस पर इतने में ।
८	प्रश्नवाचक	क्या क्यों किस लिये ।

आशंसार्थनियम ।

भूत और वर्तमानकाल ।

	अपूर्ण ।				सम्पूर्ण ।			
	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री	पुं	स्त्री
अस्मद् युष्मद् नाम	चलता	-ती	चलते	-तीं	चल चुकता	-ती	चल चुकते	-तीं

भविष्यत्काल ।

अस्मद्	चलूं	"	चलें	"	चल चुकूं	"	चल चुकें	"
युष्मद्	चले	"	चलो	"	चल चुके	"	चल चुको	"
नाम	चले	"	चलें	"	चल चुके	"	चल चुकें	"

जिन क्रियाओं के धातु स्वरान्त हैं उनके सम्पूर्ण गुण वाचक धातुओं में या प्रत्यय होने से बनते हैं । और इस विषय में प्रेरणार्थ क्रिया भी उनके तुल्य हैं । जैसे सोना गुणवाचक सोया दिलाना दिलाया । और उनकी दशा इसी क्रम के अनुसार रची जाती हैं । जितनी अयथार्थ क्रिया हैं सब अपने सम्पूर्ण गुणवाचक को इसी रीति से कल्पती हैं । जैसे देना दिया लेना लिया करना किया इत्यादि ॥

---

५ क्रियाविशेषण के विषय में ।

क्रियाविशेषण एक ऐसा शब्द अथवा एक ऐसा वाक्य है जिस से क्रिया का गुण वा समय वा गत वा रीति बतलाई जावे । अर्थात जो कोई पूछे कि कार्य किस रीति से अथवा कब हुआ तब उस का उत्तर क्रिया-विशेषण ही होगा । जैसे वह शीघ्र आया । उस से अकस्मात भेट हुई । हम ने अभ्यास करके पाठ सीखा है ॥

क्रियाविशेषण अनेक प्रकार के हैं ।

१	कालवाचक जैसे	जैसा तब जब वहीं झट अचानक इत्यादि ।
२	स्थानवाचक	यहां वहां दहने बायें ऊपर नीचे इत्यादि ।
३	भाववाचक	बहुत अधिक तनिक इत्यादि ।
४	गुणवाचक	शीघ्र धीरे निरन्तर सनातन अकस्मात ।
५	निषेधवाचक	नहीं ना मत इत्यादि ।

परंतु बहुधा एक वाक्य जिस के अन्त में असमापिका क्रियाविशेषण अथवा से शब्द परवर्ती होता है वह भी क्रियाविशेषण की रीति आता है । जैसा बड़ा यत्न करके बड़ी चतुराई से इत्यादि ॥

६ यौगिक शब्द के विषय में ।

यौगिक शब्द वह है जिस से प्रत्येक शब्द अथवा वाक्य आपस में संयुक्त होते हैं । जैसे परंतु इस लिये इत्यादि ॥

यौगिक शब्द अनेक प्रकार के हैं ।

१	मेलवाचक जैसे	और अरु एवं भी ।
२	भिन्नवाचक	अथवा वा क्या कि परंतु किंवा फिर भी तथापि अर्थात जानो ।
३	तुल्यवाचक	यथा तथा जिस रीति से उस रीति से ।
४	अनुमानवाचक	यद्यपि यदि कदाचित जो ।
५	परिणामवाचक	इस लिये यों इसी से तो नहीं तो ।
६	कारणवाचक	कि जिस से इस कारण क्योंकि जिस लिये जिस से ।
७	कालवाचक	जभी जिस समय फिर इस पर इतने में ।
८	प्रश्नवाचक	क्या क्यों किस लिये ।

७ पार्श्ववर्ती के विषय में।

पार्श्ववर्ती ऐसा शब्द है जो सञ्ज्ञा के आदि अथवा अन्त में आयके उस के अर्थ में अन्तर डालता है। जैसे दिन प्रतिदिन। बल बलहीन। पाप पापरहित अथवा निष्पाप। पहाड़ पहाड़ तले इत्यादि॥

पार्श्ववर्ती दो प्रकार का है उपसर्ग और परवर्ती।

उपसर्ग वह है जो सञ्ज्ञा के और क्रिया के आदि में युक्त होता है। वह अनेक प्रकार का है॥

१	निषेधवाचक जैसे	निस नि निर अनु अव।
२	वृद्धिवाचक	अधि अति प्र सं परि।
३	हीनवाचक	उप दुर अप।
४	द्विरुक्तिवाचक	प्रति।
५	भिन्नवाचक	पर अन्य अभि।
६	मेलवाचक	सम अनु उप।
७	गुणवाचक	कु सु।

परवर्ती वह शब्द है जो सञ्ज्ञा के अन्त में आता है। वह दो प्रकार का है॥

१ प्रकार का वह है जो सञ्ज्ञा के अन्त में युक्त होता है। जैसा रहित सहित लों॥

२ प्रकार वह है जिस के संग सञ्ज्ञा का सम्बन्धकारक आता है। जैसा लिये बीच कारण इत्यादि॥

इन में से अनेक पुल्लिङ्ग हैं। जैसे कारण द्वारा हेतु लिये इत्यादि। अनेक स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे ओर अवधि इत्यादि॥

---

८ अमिश्रित शब्दों के विषय में।

अमिश्रित शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जिन से आनन्द वा शोक वा क्रोध वा इच्छा वा आश्चर्य अचानक प्रगट होवे। जैसे अहो हाय अरे रे हो इत्यादि॥

प्रत्येक सञ्ज्ञा भी इस रीति से बोलने में आ सकती हैं। जैसे धिक्कार प्रणाम नमस्कार इत्यादि ॥

---

३ तद्धित ।

तद्धित में इस बात का वर्णन है कि किस रीति से एक प्रकार का शब्द दूसरे प्रकार के शब्द से निकलता है ॥

तद्धित की रीति से सञ्ज्ञा अनेक प्रकार की है ।

१ प्रकृतनामवाचक ।

अर्थात प्रत्येक वस्तु का निज नाम । जैसे राममोहन अलमोड़ा सरयू हिमालय इत्यादि ॥

२ जातिवाचक ।

अर्थात बहुत वस्तुओं का जिन की जाति तुल्य है उनका साधारण नाम । जैसे मनुष्य नगर नदी पर्वत इत्यादि ॥

जातिवाचकसञ्ज्ञा प्रकृतनामवाचक से दो रीति से उत्पन्न होती है । जैसे

१ अ प्रत्यय होने से शिव शैव विष्णु वैष्णव इत्यादि ।

२ ई प्रत्यय होने से महानन्द महानन्दी इत्यादि ॥

३ भाववाचक ।

अर्थात जाति और गुण का कल्पित नाम । जैसे मनुष्यता सत्यता बालकपन इत्यादि ॥

भाववाचकसञ्ज्ञा अनेक प्रकार से उत्पन्न होती है ।

१ जातिवाचक सञ्ज्ञा में ता त्व पा पन प्रत्यय होने से। जैसे मित्र मित्रता मनुष्य मनुष्यत्व बुड्ढा बुढ़ापा बालक बालकपन इत्यादि ॥

२ गुणवाचक में ता त्व आई ई प्रत्यय होने से। जैसे सत्य सत्यता उत्तम उत्तमत्व अधिक अधिकाई भला भलाई इत्यादि ॥

३ धातु के अर्थ में आहट आवट आव प्रत्यय होने से। जैसे घबराहट बनावट फैलाव इत्यादि ॥

४ क्रियावाचक।

अर्थात साञ्ज्ञिक क्रिया जो धातु का अर्थ मात्र है। जैसे मारना लिखना चलना फिरना होना इत्यादि ॥

---

५ कर्तृवाचक जो दो प्रकार से बनता है।

१ साञ्ज्ञिक क्रिया और सञ्ज्ञा में वाला हारा हार प्रत्यय होने से। जैसे मारनेवाला देनेहारा सिर्जनहार दूधवाला लकड़हारा इत्यादि।

२ किसी सञ्ज्ञा में कर्ता और दाता इन पदों के लगाने से। जैसे सृष्टिकर्ता पालनकर्ता जन्मदाता मुक्तिदाता द्रव्यदाता इत्यादि ॥

तद्धित की रीति से गुणवाचक भी उत्पन्न होते हैं। जैसे

ई	-- प्रत्यय होने से		धन धनी। ज्ञान ज्ञानी।
आल और आलु		तथा	दया दयाल दयालु। कृपा कृपाल कृपालु।
वान	-- -- --	तथा	गुण गुणवान विद्या विद्यावान।
इत	-- -- --	तथा	क्रोध क्रोधित। शोक शोकित मोह मोहित।
इक	-- -- --	तथा	प्रमाण प्रामाणिक। स्वभाव स्वाभाविक।
वन्त	-- -- --	तथा	बल बलवन्त। धन धनवन्त।
इष्ठ	-- -- --	तथा	धर्म धर्मिष्ठ। पाप पापिष्ठ।

तद्धित की रीति से प्रेरणार्थक्रिया सकर्मकक्रिया से निकलती है और सकर्मकक्रिया अकर्मकक्रिया से उत्पन्न होती है। जैसे मार मरवा। बैठ बैठवा ॥

व्यञ्जनान्त धातु जिस का स्वर ह्रस्व है उस में आ और वा प्रत्यय होता है। जैसे कर करा करवा॥

व्यञ्जनान्त धातु का स्वर जो दीर्घ होय तो ह्रस्व हो जाता है। जैसे भाग भगवा॥

स्वरान्त धातु में ला और वा प्रत्यय होता है। जो धातु दीर्घ होय तो ह्रस्व होजाता है। जैसे सो सुला ले लिवा पी पिला॥

प्रत्येक प्रेरणार्थक्रियाओं का प्रत्यय उलटा हो जाता है। जैसे बिठाल बिठला॥

---

४ समास।

समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन आदि शब्द मिलके एक शब्द हो जाता है अर्थात प्रतिशब्द के कारकचिन्ह का लोप होके एक शब्द बन जाता है॥

संस्कृत व्याकरण की रीति से समास अनेक प्रकार के हैं। परन्तु भाषा के उपयोगी छह ही प्रकार के हैं। जैसे द्वन्द्व बहुव्रीहि तत्पुरुष कर्मधारय द्विगु और अव्ययीभाव॥

द्वन्द्वसमास वह है जिस में यौगिक शब्दों के बिना अनेक शब्दों का मेल होवे जैसे घी चीनी लाओ अर्थात घी और चीनी को लाओ॥

बहुव्रीहिसमास वह है जिस में समस्यमान दो तीन शब्दों से स्वार्थ त्याग करके स्वपदार्थ सम्बन्धी दूसरी किसी सञ्ज्ञा का बोध होय। जैसे दुराचार बहुधन पीताम्बर शुभ्रवर्ण बहुपुत्र इत्यादि॥

तत्पुरुषसमास वह है जिस में उत्तर पदार्थ प्रधान रहे। जैसे काशी-वासी प्रसन्न रहता है। इस उदाहरण में वासी शब्द प्रधान है इस लिये कि स्वतन्त्रता से उसी का क्रिया में अन्वय होता है और काशी शब्द का नहीं। राजभृत्य द्यूतशौण्ड विश्वेश्वर प्रेमसागर नगरेश्वर नरेश नरवर रघुवर इत्यादि॥

कर्मधारयसमास वह है जिस में गुणवाचक शब्द का अथवा दूसरे शब्द का दूसरे शब्द के साथ समानाधिकरण होय। जैसे महाराज सर्वलोक नीलोत्पल पीतवस्त्र सुन्दरवन उत्तमपुरुष वीरभट इत्यादि॥

द्विगुसमास वह है जिस में सङ्ख्यावाचक पहिले शब्द का दूसरे शब्द से मेल होय। जैसे त्रिभुवन त्रिलोक त्रिरात्र पञ्चपात्र पञ्चरत्न नवरत्न इत्यादि॥

अव्ययीभावसमास वह है जिस में क्रियाविशेषण के साथ अन्य शब्द का मेल होय। जैसे यावज्जीवन यथाकाल आसमुद्र प्रतिपद प्रत्यङ्ग इत्यादि॥

५ सन्धि।

अक्षरों के मेल होने से शब्दों का रूप पलट जाता है इसी को सन्धि कहते हैं॥

सन्धि तीन प्रकार की है अर्थात् स्वरसन्धि हलसन्धि विसर्गसन्धि॥

१ स्वरसन्धि

स्वरसन्धि के गुण वृद्धि दीर्घ अन्तर्गत इन भेदों से चार अंश हैं॥

गुण का वर्णन।

स्वरसन्धि में इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ इन सात स्वरों को गुण होता है। जैसे इकार को गुण होने से ए होय। दृष्टान्त देव इन्द्र देवेन्द्र॥

ई	-- -- -- ए होय	-- -- परम ईश्वर	-- परमेश्वर
उ	-- -- -- ओ	-- -- महा उत्सव	-- महोत्सव
ऊ	-- -- -- ओ	-- -- एक ऊन	-- एकोन
ऋ	-- -- -- अर्	-- -- परम ऋत	-- परमर्त
ॠ	-- -- -- अर्	-- -- उप ॠकारीयति	-- उपर्कारीयति
ऌ	-- -- -- अल्	-- -- तव ऌकार	-- तवल्कार

वृद्धि का वर्णन ॥

स्वरसन्धि में अ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ इन ग्यारह स्वरों की वृद्धि होती है। जैसे अकार की वृद्धि होने से आ होय। दृष्टान्त यथार्थ याथार्थ्य ॥

इ	-- -- --	ऐ	-- -- --	शिशु --	-- शैशव
ई	-- -- --	ऐ	-- -- --	धीर --	-- धैर्य
उ	-- -- --	औ	-- -- --	गुरु --	-- गौरव
ऊ	-- -- --	औ	-- -- --	शूर --	-- शौर्य
ऋ	-- -- --	आर	-- -- --	कृपण --	-- कार्पण्य
ॠ	-- -- --	आर	-- -- --	जॄ अयति	-- जारयति
ए	-- -- --	ऐ	-- -- --	तथा एव	-- तथैव
ओ	-- -- --	औ	-- -- --	दिव्य ओषधि	-- दिव्यौषधि
ऐ	-- -- --	ऐ	-- -- --	देव ऐश्वर्य	-- देवैश्वर्य
औ	-- -- --	औ	-- -- --	उत्तम औषध	-- उत्तमौषध

दीर्घ का वर्णन।

स्वरसन्धि में समान दो स्वरों के मेल होने से दोनों स्वरों के स्थान में दीर्घ स्वर होता है। जैसे

अ	-- -- --	आ	-- -- --	दैत्य अरि	-- दैत्यारि
इ	-- -- --	ई	-- -- --	मुनि इन्द्र	-- मुनीन्द्र
उ	-- -- --	ऊ	-- -- --	विधु उदय	-- विधूदय
ऋ	-- -- --	ॠ	-- -- --	होतृ ऋकार	-- होतॄकार

अन्तर्गत का वर्णन ।

इ	य्	इति	आदि	इत्यादि
ई	य्	सुधी	उपास्य	सुध्युपास्य
उ	व्	मधु	अरि	मध्वरि
ऊ	व्	वधू	आगमन	वध्वागमन
ऋ	र्	पितृ	आगमन	पित्रागमन
ॠ	र्	कॄ	आन्ति	क्रान्ति
ऌ	ल्	ऌ	आकृति	लाकृति
ए	अय्	पे	अन	पयन
ऐ	आय्	नै	अक	नायक
ओ	अव्	गो	ईश	गवीश
औ	आव्	पौ	अक	पावक

---

२ हल्सन्धि ।

एक व्यञ्जन के दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलने में हल्सन्धि होती है वह सन्धि अनेक प्रकार की है । जैसे

तवर्गीय वर्ण और चवर्गीय वर्णों का योग होय तो तवर्गीय वर्णों के स्थान में क्रम से चवर्गीय वर्ण होय । जैसे तकार के स्थान में च होय। दृष्टान्त तत् चेष्टा तच्चेष्टा ॥

द्	ज्	सद्	जात	सज्जात
न्	ञ्	ब्रह्मन्	जय	ब्रह्मञ्जय

तवर्गीय वर्ण और टवर्गीय वर्णों का योग होय तो तवर्गीय वर्णों के स्थान में क्रम से टवर्गीय वर्ण होय । जैसा

त्	ट्	तत्	टीका	तट्टीका
न्	ण्	चक्रिन्	ढौकसे	चक्रिण्ढौकसे ।

तकार से परे शकार होय तो शकार के स्थान में छकार होय । जैसे तत् शरीर तच्छरीर ॥

तवर्गीय वर्णों से परे लकार होय तो उन के स्थान में लकार होय और मकार के ऊपर अर्द्धानुस्वार भी होय। जैसे तत् लोक तल्लोक। विद्वान् लिखति विद्वाँल्लिखति ॥

वर्गों के पहिले और दूसरे वर्णों से स्वर वा अन्तस्थ वा तीसरे चौथे वर्ण परे रहें तो उन के स्थान में निज वर्ग का तीसरा वर्ण होय। जैसे

त् -- -- -- द् -- -- -- तत् अवधि -- तद्वधि

क् -- -- -- ग् -- -- -- वाक् व्यय -- वाग्व्यय

वर्गों के प्रथम वर्णों से अनुनासिक वर्ण परे होवें तो उन के स्थान में निज वर्ग का अनुनासिक होवे। जैसा

क् -- -- ङ् -- -- वाक् मन -- वाङ्मन

त् -- -- न् -- -- तत् मध्यम -- तन्मध्यम इत्यादि ॥

अनुस्वार से ककारादि वर्ण परे होवे तो उस के स्थान में परस्थित वर्ण सम्बन्धी अनुनासिक होय। जैसा संकल्प सङ्कल्प। शंकर शङ्कर। संचित सञ्चित। संजय सञ्जय। शंतनु शन्तनु। संपूर्ण सम्पूर्ण इत्यादि ॥

ह्रस्व स्वर से परस्थित ङ ण न इन से स्वर परे रहें तो इन को द्वित्व होय अर्थात् ये दो होवें। जैसे सन् आत्मा सन्नात्मा। प्रत्यङ् आत्मा प्रत्यङ्ङात्मा। सुगण् ईश सुगण्णीश इत्यादि ॥

---

३ विसर्गसन्धि।

विसर्गान्त शब्दों की सन्धि अनेक प्रकार की होती है। जैसे

च और छ इन दोनों वर्णों के पहिले विसर्ग रहे तो श होय। जैसा निः चिन्त निश्चिन्त ॥

ट ठ इन दोनों वर्णों के पहिले विसर्ग रहे तो ष होय। जैसा धनुः टङ्कार धनुष्टङ्कार ॥

त थ इन दोनों वर्णों से पहिले रहे तो स होय। जैसा रामः तत्र रामस्तत्र ॥

अन्तर्गत का वर्णन ।

इ	य्	इति	आदि	इत्यादि
ई	य्	सुधी	उपास्य	सुध्युपास्य
उ	व्	मधु	अरि	मध्वरि
ऊ	व्	वधू	आगमन	वध्वागमन
ऋ	र्	पितृ	आगमन	पित्रागमन
ॠ	र्	कॄ	आन्ति	क्रान्ति
ऌ	ल्	ऌ	आकृति	लाकृति
ए	अय्	पे	अस	पयस
ऐ	आय्	नै	अक	नायक
ओ	अव्	गो	ईष	गवीष
औ	आव्	पौ	अक	पावक

---

२ हल्सन्धि ।

एक व्यञ्जन के दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलने में हल्सन्धि होती है वह सन्धि अनेक प्रकार की है । जैसे

तवर्गीय वर्ण और चवर्गीय वर्णों का योग होय तो तवर्गीय वर्णों के स्थान में क्रम से चवर्गीय वर्ण होय । जैसे तकार के स्थान में च होय । दृष्टान्त तत् चेष्टा तच्चेष्टा ॥

द्	ज्	सद्	जात	सज्जात
न्	ञ्	ब्रह्मन्	जय	ब्रह्मञ्जय

तवर्गीय वर्ण और टवर्गीय वर्णों का योग होय तो तवर्गीय वर्णों के स्थान में क्रम से टवर्गीय वर्ण होय । जैसा

त्	ट्	तत्	टीका	तट्टीका
न्	ण्	चक्रिन्	ढौकसे	चक्रिण्ढौकसे ।

तकार से परे शकार होय तो शकार के स्थान में छकार होय । जैसे तत् शरीर तच्छरीर ॥

तवर्गीय वर्णों से परे लकार होय तो उन के स्थान में लकार होय और मकार के ऊपर अर्द्धानुस्वार भी होय। जैसे तत् लोक तल्लोक। विद्वान् लिखति विद्वाँल्लिखति॥

वर्गों के पहिले और दूसरे वर्णों से स्वर वा अन्तस्थ वा तीसरे चौथे वर्ण परे रहें तो उन के स्थान में निज वर्ग का तीसरा वर्ण होय। जैसे

त् -- -- -- द् -- -- -- तत् अवधि -- तदवधि
क् -- -- -- ग् -- -- -- वाक् व्यय -- वाग्व्यय

वर्गों के प्रथम वर्णों से अनुनासिक वर्ण परे होवें तो उन के स्थान में निज वर्ग का अनुनासिक होवे। जैसा

क् -- -- ङ् -- -- वाक् मन -- वाङ्मन
त् -- -- न् -- -- तत् मध्यम -- तन्मध्यम इत्यादि॥

अनुस्वार से ककारादि वर्ण परे होवे तो उस के स्थान में परस्थित वर्ण सम्बन्धी अनुनासिक होय। जैसा संकल्प सङ्कल्प। शंकर शङ्कर। संचित सञ्चित। संजय सञ्जय। शंतनु शन्तनु। संपूर्ण सम्पूर्ण इत्यादि॥

ह्रस्व स्वर से परस्थित ङ ण न इन से स्वर परे रहें तो इन को द्वित्व होय अर्थात् ये दो होवें। जैसे सन् आत्मा सन्नात्मा। प्रत्यङ् आत्मा प्रत्यङ्ङात्मा। सुगण् ईश सुगण्णीश इत्यादि॥

---

३ विसर्गसन्धि।

विसर्गान्त शब्दों की सन्धि अनेक प्रकार की होती है। जैसे

च और छ इन दोनों वर्णों के पहिले विसर्ग रहे तो श होय। जैसा निः चिन्त निश्चिन्त॥

ट ठ इन दोनों वर्णों के पहिले विसर्ग रहे तो ष होय। जैसा धनुः टङ्कार धनुष्टङ्कार॥

त थ इन दोनों वर्णों से पहिले रहे तो स होय। जैसा रामः तत्र रामस्तत्र॥

क ख और प फ इन से पहिले रहे तो अर्द्धविसर्ग होय वा विसर्ग ही रहे । जैसा क ≍ करोति वा कः करोति क ≍ पठति वा कः पठति ॥

ह य व र ल ञ म ङ ण न झ ढ भ म ध घ ग ज ड द ब इन वर्णों के पहिले रहे तो ओ होय । जैसे रामः हसति रामो हसति कृष्णः याति कृष्णो याति इत्यादि ॥

स्वर वा अन्तस्थ वा ह ण न म ङ झ ढ ध घ ग भ ज ड द ब इन वर्णों के पहिले इकार वा उकार से पर होय तो र होय । जैसे ज्योतिः वित ज्योतिर्वित । हरिः गच्छति हरिर्गच्छति इत्यादि ॥

तीसरा भाग ।

वाक्यविन्यास ।

वाक्यविन्यास वह है जिस में प्रत्येक शब्दों के मिलने से वाक्य बनने की रीति वर्णित होती है ॥

शुद्ध वाक्य में दो पदार्थ हैं. एक विशेष अर्थात उद्देश्य । दूसरा विशेषक अर्थात विधेय ॥

१ विशेष और विशेषक का वर्णन ॥

विशेष वह है जिस का विषय कहा जावे । विशेषक वह है जो विशेष का विषय बतलावे । जैसा देवीदत्त चलता है । इस वाक्य में देवीदत्त विशेष है क्योंकि उस का विषय कहा जाता है कि चलता है । और चलता है यह शब्द इस वाक्य का विशेषक है क्योंकि विशेष का विषय बतलाता है ॥

विशेष अनेक प्रकार का है। जैसा

१	सञ्ज्ञा	देवीदत्त चलता है।
२	सर्वनाम	वह चलता है।
३	साञ्ज्ञिकक्रिया	लिखना कठिन है।
४	एकवाक्य	सत्यता के लिये मर जाना भला है।
५	गुप्त	बरसता है। गरजता है। चला गया।

विशेषक का मूल सदा क्रिया है। परन्तु उसके संग समस्त प्रकार के शब्द मिल सकते हैं। जैसा चन्द्रगुप्त एक बड़ा धनी और पराक्रमी उस काल का अति प्रसिद्ध राजा था॥

२ विशेष और विशेषक का मिलान।

विशेष और विशेषक तीन विषयों में मेल रखते हैं।

१ सङ्ख्या।

अर्थात जो विशेष का एकवचन होय तो विशेषक का भी एकवचन होगा। जैसा लड़का चलता है॥

जब विशेष का बहुवचन होय तब विशेषक का भी बहुवचन होगा। जैसा लड़के चलते हैं॥

परन्तु इसके विरुद्ध जाना चाहिये।

१ जो विशेष में अनेक अप्राणिवाचक सञ्ज्ञा हों तब विशेषक का एकवचन हो सकता है। जैसा खाना कपड़ा घर इत्यादि मनुष्य के लिये अवश्य है वा हैं॥

२ जो प्रत्येक एकवचन सञ्ज्ञा के बीच भिन्नवाचक यौगिक शब्द होय तो विशेषक का एकवचन ही होवे। जैसा देवीदत्त वा रामचन्द्र वा कृष्णदास जायगा॥

३ आदर की रीति से बहुवचन विशेषक एकवचन विशेष से मिलता है। जैसा प्रभु विराजते हैं। महाराज आज्ञा देते हैं॥

२ लिङ्ग ।

जैसे लड़का चलता है । लड़की चलती है ।

जो विशेष में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों की सङ्ख्या आती है तो विशेषक का लिङ्ग उस सङ्ख्या के साथ मिलेगा जो समीप है । जैसा लड़के और लड़कियां भली देख पड़ती हैं ॥

परन्तु जो सब के सब शब्द बीच में आवें तो विशेषक पुल्लिङ्ग होगा। जैसा लड़के और लड़कियां सब के सब भले देख पड़ते हैं ॥

---

३ कर्त्ता ।

जैसा मैं चलता हूं तुम चलते हो ॥

जो विशेष में अस्मद् और युष्मद् दोनों आते हैं तो विशेषक अस्मद् होगा । जैसा हम और तुम जायंगे ॥

जो युष्मद् और नाम आता है तो विशेषक युष्मद् होगा । जैसा तुम और वे जाओगे ॥

जब विशेषक एक सकर्मक क्रिया की सम्पूर्ण दशा में है तब विशेष के संग नहीं मिलता । परन्तु विशेष कर्त्ताकारक के दूसरे रूप में होगा। जिस का लक्षण ने है। और विशेषक के दो रूप हो सकते हैं॥

१ जब क्रिया के संग कर्मकारक का चिन्ह प्रगट रहता है तब नामवाचक क्रिया एकवचन और पुल्लिङ्ग होगी । जैसा मैं ने उस को मारा है लोगों ने उन को पकड़ा है ॥

२ जब क्रिया के संग कर्त्ताकारक आता है तब क्रिया की सङ्ख्या और लिङ्ग उसी के अनुसार होगा । जैसे मैं ने लड़की देखी ॥

जो अकर्मक क्रिया होय तो विशेष और विशेषक मिलते हैं । जैसे मैं बोला । वे चले । लड़की आई ।

सामान्यत: वाक्य में विशेष पहिले आता है और विशेषक पीछे । जैसा यह लड़का मन लगायके पढ़ता है । परन्तु अवधारण के निमित्त विशेषक पहिले आता है। जैसे धन्य हैं वे जो ईश्वर की आज्ञा मानते हैं॥

३ गुणवाचक और सञ्ज्ञा का मिलान।

गुणवाचक और असमापिकागुणवाचक और सर्वनामीयगुणवाचक जिस सञ्ज्ञा के गुण को बतलाते हैं उसी की सङ्ख्या और लिङ्ग और कारक के विषय में मिलते हैं। जैसे अच्छी लड़की। भले लड़के। दौड़ता हुआ घोड़ा। मेरी पोथी। तुम्हारे बेटे॥

परन्तु कारकों के लक्षण। जैसे को ने से में इत्यादि। और बहुवचन-बोधक प्रत्यय ओं यां उस गुणवाचक में जो सञ्ज्ञा के साथ आता है नहीं लगते। निष्केवल सञ्ज्ञा ही के पीछे आते हैं। जैसे अच्छी लड़की को। भले लड़कों से। दौड़ते हुए घोड़े ने। मेरी पोथियां। तुम्हारे बेटों को।

जब गुणवाचक अकेला होय तो उस में ये प्रत्यय लगते हैं। जैसे भलों का आदर करना उचित है। छोटे को दुःख देना बुरा है। इन वाक्यों में सञ्ज्ञा जैसी मनुष्य आदि गुप्त है॥

जब गुणवाचक प्रत्येक सञ्ज्ञा के साथ आता जिन के लिङ्ग भिन्न हैं तब गुणवाचक पुल्लिङ्ग होगा। जैसा पुरुष नारी लड़के लड़कियां पशु पक्षी आदि सब के सब भले हैं॥

जब प्रत्येक अप्राणिवाचक सञ्ज्ञा के साथ गुणवाचक आता है तब उस का लिङ्ग उस सञ्ज्ञा के साथ मिलेगा जो पीछे आती है। जैसा मन्दिर पर्वत वृक्ष नदी देखने में बहुत अच्छी लगती हैं॥

सङ्ख्यावाचक गुणवाचक का एक निज व्यवहार है जो क्रम से परे है। जैसा सैकड़ों बरस। लाखों रुपये। करोड़ों युग। हजारों मनुष्य॥

एक समूह के समस्त पदार्थों को इस रीति से बतलाते हैं। जैसे तीनों के तीन। दशों के दश। बीसों के बीस॥

जब गुणवाचक और सञ्ज्ञा दोनों विशेष में अथवा दोनों विशेषक में एक ही सङ्ग हैं तब गुणवाचक अपनी सञ्ज्ञा के पहिले आता है। जैसा भला मनुष्य अपने दुष्ट बैरी को भी छल नहीं देता है॥

२ लिङ्ग ।

जैसे लड़का चलता है। लड़की चलती है।

जो विशेष में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों की सञ्ज्ञा आती है तो विशेषक का लिङ्ग उस सञ्ज्ञा के साथ मिलेगा जो समीप है। जैसा लड़के और लड़कियां भली देख पड़ती हैं॥

परन्तु जो सब के सब शब्द बीच में आवें तो विशेषक पुल्लिङ्ग होगा। जैसा लड़के और लड़कियां सब के सब भले देख पड़ते हैं॥

---

३ कर्त्ता ।

जैसा मैं चलता हूं तुम चलते हो॥

जो विशेष में अस्मद् और युष्मद् दोनों आते हैं तो विशेषक अस्मद् होगा। जैसा हम और तुम जायंगे॥

जो युष्मद् और नाम आता है तो विशेषक युष्मद् होगा। जैसा तुम और वे आओगे॥

जब विशेषक एक सकर्मक क्रिया की सम्पूर्ण दशा में है तब विशेष के संग नहीं मिलता। परन्तु विशेष कर्त्ताकारक के दूसरे रूप में होगा। जिस का लक्षण ने है। और विशेषक के दो रूप हो सकते हैं॥

१ जब क्रिया के संग कर्मकारक का चिन्ह प्रगट रहता है तब नामवाचक क्रिया एकवचन और पुल्लिङ्ग होगी। जैसा मैं ने उस को मारा है लोगों ने उन को पकड़ा है॥

२ जब क्रिया के संग कर्त्ताकारक आता है तब क्रिया की सङ्ख्या और लिङ्ग उसी के अनुसार होगा। जैसे मैं ने लड़की देखी॥

जो अकर्मक क्रिया होय तो विशेष और विशेषक मिलते हैं। जैसे मैं बोला। वे चले। लड़की आई।

सामान्यतः वाक्य में विशेष पहिले आता है और विशेषक पीछे। जैसा यह लड़का मन लगायके पढ़ता है। परन्तु अवधारण के निमित्त विशेषक पहिले आता है। जैसे धन्य हैं वे जो ईश्वर की आज्ञा मानते हैं॥

३ गुणवाचक और सञ्ज्ञा का मिलान।

गुणवाचक और असमापिकागुणवाचक और सर्वनामीयगुणवाचक जिस सञ्ज्ञा के गुण को बतलाते हैं उसी की सङ्ख्या और लिङ्ग और कारक के विषय में मिलते हैं। जैसे अच्छी लड़की। भले लड़के। दौड़ता हुआ घोड़ा। मेरी पोथी। तुम्हारे बेटे॥

परन्तु कारकों के लक्षण। जैसे को ने से में इत्यादि। और बहुवचन-बोधक प्रत्यय ओं यां उस गुणवाचक में जो सञ्ज्ञा के साथ आता है नहीं लगते। निष्केवल सञ्ज्ञा ही के पीछे आते हैं। जैसे अच्छी लड़की को। भले लड़कों से। दौड़ते हुए घोड़े ने। मेरी पोथियां। तुम्हारे बेटों को।

जब गुणवाचक अकेला होय तो उस में ये प्रत्यय लगते हैं। जैसे भलों का आदर करना उचित है। छोटे को दुःख देना बुरा है। इन वाक्यों में सञ्ज्ञा जैसी मनुष्य आदि गुप्त है॥

जब गुणवाचक प्रत्येक सञ्ज्ञा के साथ आता जिन के लिङ्ग भिन्न हैं तब गुणवाचक पुल्लिङ्ग होगा। जैसा पुरुष नारी लड़के लड़कियां पशु पक्षी आदि सब के सब भले हैं॥

जब प्रत्येक अप्राणिवाचक सञ्ज्ञा के साथ गुणवाचक आता है तब उस का लिङ्ग उस सञ्ज्ञा के साथ मिलेगा जो पीछे आती है। जैसा मन्दिर पर्वत वृक्ष नदी देखने में बहुत अच्छी लगती हैं॥

सङ्ख्यावाचक गुणवाचक का एक निज व्यवहार है जो क्रम से परे है। जैसा सैकड़ों बरस। लाखों रुपये। करोड़ों युग। हजारों मनुष्य॥

एक समूह के समस्त पदार्थों को इस रीति से बतलाते हैं। जैसे तीनों के तीन। दशों के दश। बीसों के बीस॥

जब गुणवाचक और सञ्ज्ञा दोनों विशेष में अथवा दोनों विशेषक में एक ही सङ्ग हैं तब गुणवाचक अपनी सञ्ज्ञा के पहिले आता है। जैसा भला मनुष्य अपने दुष्ट बैरी को भी छल नहीं देता है॥

४ सर्वनामों का मिलान।

जब कोई सर्वनाम एक सञ्ज्ञा से जो अगिले वाक्य में आई सम्बन्ध रखता है तो सङ्ख्या के विषय में उसी सञ्ज्ञा से मिलता है। परन्तु कारक के विषय में अपने वाक्य की क्रिया के अथवा सञ्ज्ञा के आधीन है। जैसा हमारे पास बहुत बैल थे जिन की रक्षा हम करते थे परन्तु डाकुओं ने उन को लूट लिया है॥

जब सर्वनाम अपनी सञ्ज्ञा के आगे आता है तब गुणवाचक के तुल्य उस का कारक उस सञ्ज्ञा से मिलता है जैसा जिन बैलों को मैं ने मोल लिया था डाकुओं ने लूट लिया है। उन पुस्तकों को पढ़ो जिन का अर्थ गुणदायक है। मुझ दुःखी पर दया करो॥

अधिकारवाचक अपना शब्द सदा उस सञ्ज्ञा अथवा सर्वनाम से सम्बन्ध रखता है जो क्रिया का कर्त्ता है। जैसा देवीदत्त ने अपने पिता को रुपया दिया। तुम अपनी विद्या हम को सिखाओ। हम अपनी तुम को सिखावेंगे॥

सर्वनाम बहुधा अकेला आता है और उसकी सञ्ज्ञा गुप्त रहती है। जैसा जिसका वचन नित्य सत्य है उसका नित्य विश्वास होगा॥

जब प्रत्येक क्रिया एक ही वाक्य में आती है तब सर्वनाम सिर्फ़ केवल पहिली क्रिया के साथ आता है। जैसा वह झट फिर आया और कहा॥

भाषा की बोलचाल में अस्मद् और युष्मद् कर्ता सर्वनाम एक ही जन के लिये भी बहुवचन कहा जाता है। जैसा हम जाते हैं। तुम जाते हो॥

युष्मत्कर्ता के एकवचन प्रयोग से अनादर प्रगट होता है। जैसा तू जा।

नामकर्ता का बहुवचन गौरवसहित होता है। जैसा वे जाते हैं॥

दूसरे का व्यवहार बतलाने में उसी दूसरे का निज शब्द कहा जाता है। जैसा उस ने कहा कि हम जायंगे। इस वाक्य में हम शब्द इस दूसरे कहनेवाले से सम्बन्ध नहीं रखता है परन्तु पहिले कहने वाले से सम्बन्ध रखता है॥

जिस वाक्य में सन्देह की भावना होय अर्थात जिस के विषय में प्रश्न हो सक्ता है उस में सम्बन्धवाचक सर्वनाम की संती प्रश्नवाचक सर्वनाम आता है। जैसा मैं जानता हूं कि कौन है। हम से कहो कि कौन है॥

जब सर्वनाम एक वाक्य के पलटे में आता है तब एकवचन होगा। जैसा अपने बैरियों का भला करना जो अत्यन्त कठिन है सो धर्मिष्ठ लोग उचित जानते हैं॥

भाषा के व्यवहार से कभी सम्बन्धवाचक सर्वनाम अनिश्चयवाचक की संती आता है। जैसा जो जिस के हाथ लगा सो अलग किया अर्थात जिस किसी के हाथ जो कुछ लगा उस ने उस को अलग किया॥

५ कारकों का मिलान।

जो सञ्ज्ञा वा सर्वनाम वा गुणवाचक प्रश्न का उत्तर होवे तो उसका कारक वही होगा जिस में प्रश्न का शब्द आवे। जैसा यह किस की पुस्तक है। देवीदत्त की। तुम ने किस को बुलाया। तुम को। मन का चैन किस को प्राप्त होता है। धर्मी को॥

प्रत्येक सञ्ज्ञा वा सर्वनाम जिन को एक ही क्रिया व्याप्त करती है वे एक ही कारक में होंगे। जैसे मैं इस को और उस को और तुम को और घर को देखता हूं॥

१ कर्ताकारक।

कर्ताकारक निज करके वाक्य के विशेष का कारक है। परन्तु कभी कभी विशेषक में भी आता है॥

१ जब विशेष की क्रिया जीवत्वाचक होय। जैसा कोई मनुष्य ज्ञानी उत्पन्न नहीं होता है। हमारा भाई बहुत रोगी रहा।

२ अकर्मकक्रिया के सङ्ग। जैसा यह लड़का बहुत भला देख पड़ता है। समस्त मनुष्य विद्यार्थी नहीं निकलते हैं॥

३ प्रत्येक कर्मशिवाच्य क्रिया के सङ्ग। जैसा अज्ञानी मनुष्य मूर्ख कहा जाता है। दयावान राजा धर्मावतार समझा जाता है॥

४ सकर्मकक्रिया की सम्पूर्ण दशा में जब कर्ताकारक का दूसरा रूप विशेष में आता है तब विशेषक में कर्ताकारक हो सकता है। जैसा हम ने यह पुस्तक पढ़ी है॥

५ कभी कभी सकर्मकक्रिया कर्मकारक की संती कर्ताकारक को व्याप्त करती है। १ जब अनुमत्यर्थ नियम में है। जैसा घोड़ा लाओ वह पुस्तक दो। २ जब सम्प्रदानकारक भी उपस्थित है। जैसा गुरु हम को परम ज्ञान बतलाता है। हम तुम्हारे लिये यह घोड़ा भेजेंगे॥

---

२ कर्मकारक और सम्प्रदानकारक।

कर्मकारक वह है जिस को सकर्मकक्रिया व्याप्त करती है और उसका लक्षण को है। परन्तु यही लक्षण सम्प्रदानकारक का भी है। इस कारण दोनों का वर्णन एक ही साथ किया जाता है॥

इन दोनों कारकों का भेद यह है कि कर्मकारक को क्रिया का कार्य लगता है। परन्तु सम्प्रदानकारक को क्रिया के कार्य का फल प्राप्त होता है। जैसा मैं उसे तुम को दूंगा। इस वाक्य में उसे कर्मकारक है और तुम को सम्प्रदान॥

जब दोनों कारक एक ही क्रिया के सङ्ग आते हैं तब कर्मकारक की संती कर्ताकारक बहुधा आता है। जैसे वह अपना घोड़ा हम को देगा॥

जब कर्म अथवा सम्प्रदानकारक अकेला आता है तब उस का लक्षण बहुधा गुप्त रहता है। जैसा वह मेरे घर आया है॥

ये कारक बहुधा गुणवाचक के सङ्ग भी आते हैं। जैसा उस को उचित है। हम को योग्य है। हमारे लिये प्रसन्न है॥

कभी कभी सम्प्रदानकारक का लक्षण लिये शब्द है। परन्तु सचमुच यह शब्द पार्श्ववर्ती है जो सम्बन्धकारक के सङ्ग आता है॥

३ करणकारक ।

करणकारक उसे कहते हैं जो कि क्रिया की सिद्धि में परम उपकारक है। और उसका लक्षण बहुधा करके और से है। जैसा रामचन्द्र ने बाण करके वा बाण से बाली को मारा । यह कारक सचमुच एक प्रकार का क्रिया विशेषण है क्योंकि उस से क्रिया के कार्य की रीति वर्णन होती है ॥

---

४ अपादानकारक ।

अपादानकारक का निज अर्थ अवधि वा मूल है अर्थात वह है जिस से कोई वस्तु निकलती है । उस का लक्षण से है और यथार्थ रीति से यह कारक और करणकारक तुल्य हैं अर्थात करणकारक का अर्थ इस में आ जाता है । परन्तु अपादानकारक के दो एक और व्यवहार हैं जो करणकारक से भिन्न हैं ॥

१ स्थानबोधक ।

जैसा वह एक गांव से आया । वह नगर इस नगर से बहुत दूर है ॥

२ समयबोधक ।

जैसा जब से वह आया तब से यहां रहा । बहुत बरसों से हम ने उस को नहीं देखा ॥

३ गुणवाचक की वृद्धि और न्यूनताबोधक ।

जैसा वह इस से बड़ा है । यह उस से ऊंचा है । यह हम से छोटा है ॥

३ प्रत्येक कर्मविवाच्य क्रिया के सङ्ग। जैसा अज्ञानी मनुष्य मूर्ख कहा जाता है। दयावान राजा धर्मावतार समझा जाता है॥

४ सकर्मकक्रिया की सम्पूर्ण दशा में जब कर्ताकारक का दूसरा रूप विशेष में आता है तब विशेषक में कर्ताकारक हो सकता है। जैसा हम ने यह पुस्तक पढ़ी है॥

५ कभी कभी सकर्मकक्रिया कर्मकारक की संती कर्ताकारक को व्याप्त करती है। १ जब अनुमत्यर्थ नियम में है। जैसा घोड़ा लाओ वह पुस्तक दो। २ जब सम्प्रदानकारक भी उपस्थित है। जैसा गुरु हम को परम ज्ञान बतलाता है। हम तुम्हारे लिये यह घोड़ा भेजेंगे॥

---

२ कर्मकारक और सम्प्रदानकारक।

कर्मकारक वह है जिस को सकर्मकक्रिया व्याप्त करती है और उसका लक्षण को है। परन्तु यही लक्षण सम्प्रदानकारक का भी है। इस कारण दोनों का वर्णन एक ही साथ किया जाता है॥

इन दोनों कारकों का भेद यह है कि कर्मकारक को क्रिया का कार्य लगता है। परन्तु सम्प्रदानकारक को क्रिया के कार्य का फल प्राप्त होता है। जैसा मैं उसे तुम को दूंगा। इस वाक्य में उसे कर्मकारक है और तुम को सम्प्रदान॥

जब दोनों कारक एक ही क्रिया के सङ्ग आते हैं तब कर्मकारक की संती कर्ताकारक बहुधा आता है। जैसे वह अपना घोड़ा हम को देगा॥

जब कर्म अथवा सम्प्रदानकारक अकेला आता है तब उस का लक्षण बहुधा गुप्त रहता है। जैसा वह मेरे घर आया है॥

ये कारक बहुधा गुणवाचक के सङ्ग भी आते हैं। जैसा उस को उचित है। हम को योग्य है। हमारे लिये प्रसन्न है॥

कभी कभी सम्प्रदानकारक का लक्षण लिये शब्द है। परन्तु सचमुच यह शब्द पार्श्ववर्ती है जो सम्बन्धकारक के सङ्ग आता है॥

३ करणकारक ।

करणकारक उसे कहते हैं जो कि क्रिया की सिद्धि में परम उपकारक है। और उसका लक्षण बहुधा करके और से है। जैसा रामचन्द्र ने बाण करके वा बाण से बाली को मारा । यह कारक सचमुच एक प्रकार का क्रिया विशेषण है क्योंकि उस से क्रिया के कार्य की रीति वर्णन होती है ॥

---

४ अपादानकारक ।

अपादानकारक का निज अर्थ अवधि वा मूल है अर्थात वह है जिस से कोई वस्तु निकलती है । उस का लक्षण से है और यथार्थ रीति से यह कारक और करणकारक तुल्य हैं अर्थात करणकारक का अर्थ इस में आ जाता है । परन्तु अपादानकारक के दो एक और व्यवहार हैं जो करणकारक से भिन्न हैं ॥

१ स्थानबोधक ।

जैसा वह एक गांव से आया । वह नगर इस नगर से बहुत दूर है ॥

२ समयबोधक ।

जैसा जब से वह आया तब से यहां रहा । बहुत बरसों से हम ने उस को नहीं देखा ॥

३ गुणवाचक की वृद्धि और न्यूनताबोधक ।

जैसा वह इस से बड़ा है । यह उस से ऊंचा है । यह हम से छोटा है ॥

४ संगबोधक ।

यह अर्थ निज करके क्रिया के साथ आता है। जैसा उस से कहना। हम से मिलना। उस से भेंट करना। गुरु से पूछना। गुणवान से मित्रता करनी॥

५ मार्गबोधक ।

जैसे काशी से होके आना।

६ मूलबोधक ।

जैसे ज्ञान से गुण प्राप्त होता है।

---

५ सम्बन्धकारक ।

इस कारक में दो सञ्ज्ञा आपस में सम्बन्धी होती हैं। और उसका लक्षण का के की है॥

इस विषय में भाववाचक सञ्ज्ञा जब दूसरी सञ्ज्ञा के संग आती है तब दोनों एक ही कारक के हो जाते हैं। जैसा दस मन गेहूं इत्यादि॥

बहुधा परवर्त्ती इस कारक के सङ्ग मिलते हैं। जैसा उस के निमित्त। ज्ञान के बिना। मेरे आगे। उस के उपरान्त। इस के सङ्ग इत्यादि॥

कभी कभी इस कारक का चिन्ह गुप्त रहता है। जैसा गङ्गातीर पर। पहाड़ तले॥

इस कारक से वस्तु का मोल भी कहा जाता है। जैसा दो सौ रुपये का घोड़ा॥

अवधारण का भी अर्थ इस कारक से निकलता है। जैसा दरिद्री का दरिद्री है। कभी कभी अवधारण अर्थ में भी इस कारक का लक्षण गुप्त रहता है। जैसा रातो रात इत्यादि॥

६ अधिकरणकारक ।

इस कारक का मूल अर्थ कर्त्ता का निवास है। परन्तु गमनार्थक क्रिया के योग में कभी कभी कर्मकारक की संती आता है। जैसे वह हाट में गया। वा हाट को गया ॥

६ क्रिया का मिलान।

१ दशा।

जब किसी वस्तु के विषय में कोई कार्य्य वा गति बतलानी है तो पहिले पूछा चाहिये कि काल भूत वा भविष्यत वा बर्त्तमान है। दूसरा कि कार्य अपूर्ण है वा सम्पूर्ण। इसी रीति से छह वर्णित दशाएं उत्पन्न होती हैं ॥

अर्थात।

	अपूर्ण।	सम्पूर्ण।
भूत	मारता था	मारा था
भविष्यत	मारूंगा	मार चुकूंगा
बर्तमान	मारता हूं	मारा है

भविष्यत की अपूर्णदशा अर्थात मारूंगा बहुधा अनिश्चित की रीति से आती है क्योंकि उस में निश्चय वर्णन नहीं है कि कार्य अपूर्ण हुआ वा सम्पूर्ण। जो कार्य के अपूर्ण होने का निश्चय जाना चाहे तो इस रीति से कहेंगे अर्थात् मारता हूंगा ॥

इसी प्रकार से सम्पूर्ण गुणवाचक बिना होना क्रिया के रूप के भूत अनिश्चित में आ सकता है। जैसा हमने उस को मारा। इस में कार्य का निश्चय समाचार नहीं है कि अपूर्ण हुआ वा सम्पूर्ण। परन्तु जो ऐसा कहें अर्थात् मैं ने उस को मारा है तो निश्चय समाचार है कि बर्तमान काल में कार्य हो चुका है ॥

शीघ्रता बतलाने के लिये कभी कभी वर्तमानकाल भविष्यत की सेंती आता है। जैसा मैं अभी अपने घर जाता हूं और अपने पुत्र को लाकर तेरे सन्मुख उपस्थित करता हूं॥

निश्चय की रीति से कभी कभी भूतकाल भी भविष्यत की सेंती आता है। जैसा अपने मन में मैं ने जाना कि व्याघ्र मुझे खा गया पर बच गया॥

भविष्यत्काल बहुधा सन्देह वा अनुमान के द्वारा आता है। जैसा कितना दिन चढ़ा होगा। वह बड़ा ज्ञानी होगा। हमारा भाई कहां होगा। वह घर गया होगा॥

सकर्मक क्रियाओं के तीनों कालों की सम्पूर्ण दशाओं के सङ्ग कर्ताकारक का दूसरा रूप आता है। जैसे मैं ने मारा था। उस ने मारा है। तुम ने मारा होगा॥

परन्तु लाना बोलना भूलना लड़ना बकना और समस्त अकर्मक क्रियाओं के सङ्ग कर्ताकारक का पहिला रूप आता है। जैसा वह लाया। मैं बोला। वह बका। सिपाही लड़ा। तुम भूले इत्यादि॥

---

२ नियम।

१ भावमात्रवाचक नियम।

साङ्गिकक्रिया उस सञ्ज्ञा के साथ आ सकती है जो क्रिया का कर्ता हो अथवा जिस को सकर्मकक्रिया व्याप्त करे। और तब वह उस सञ्ज्ञा के लिङ्ग से भी मिलेगी। जैसा तुम्हारी भाषा सीखनी अति कठिन है। मैं ने तुम्हारी भाषा बोलनी नहीं सीखी॥

कभी कभी साङ्गिकक्रिया से निश्चय अर्थ प्रगट होता है। जैसा यह होने का नहीं। वह नहीं मरने का। तुम को वहां जाना होगा॥

जब साङ्गिकक्रिया दूसरी क्रिया के सङ्ग अकेली आती है तब उसका प्रत्यय पलट जाता है और कारक का लक्षण गुप्त रहता है। जैसा वह कहने लगा। उसको जाने दो॥

जब अपूर्ण गुणवाचक असमापिकाक्रिया सञ्ज्ञा के सङ्ग आती है तब बहुधा उसके सङ्ग हुआ शब्द मिलता है। जैसा हमने एक दौड़ते हुए घोड़े को देखा। परन्तु जो सञ्ज्ञा के पीछे आवे तो अकेली ही रहे ॥ जैसा हमने लड़के को आते देखा।

कभी कभी अवधारणवाचक उपसर्ग ही शब्द अपूर्ण गुणवाचक के अन्त में युक्त होता है और इस के मिलने से शीघ्रता प्रगट होती है। जैसा सुनते ही चला गया अर्थात् उस ने सुना और झट चला गया ॥

कार्य की नित्यता बतलाने के लिये अपूर्ण गुणवाचक दोहराया जाता है। जैसे चलते चलते यहां पहुंचा ॥

प्रत्येक गुणवाचक भी एक कर्ता के सङ्ग आ सकते हैं। जैसे चलते फिरते गिरते पड़ते देखते भालते यहां पहुंचा हूं ॥

अपूर्ण और सम्पूर्ण दोनों गुणवाचक जब कर्ताकारक सञ्ज्ञा के साथ आते हैं तब उन का प्रत्यय पलट जाता है और कभी कभी हुए शब्द भी उन से युक्त होता है। जैसा आभूषण पहिने हुए सहस्रों अप्सरा झूलती हैं। वह चलते हुए कह गया था कि घोड़े पर चढ़ते मत मारियो ॥

कभी कभी अपूर्णगुणवाचक दूसरी सञ्ज्ञा वा सर्वनाम से मिलता है जो कर्त्ता से भिन्न है। जैसा सब के देखते वह मर गया। मेरे रहते वह ऐसा न करेगा। अपने स्वामी के जीते वह कुशल से थी ॥

सम्पूर्ण गुणवाचक बहुधा सञ्ज्ञा की रीति आते हैं। जैसा वह मेरा कहा नहीं मानता है। वह हमारा देखा है। हिन्दू अपने मुए हुओं को दग्ध करते हैं। एक क्षण बिन सोचे कपट के नहीं रहता ॥

कार्य की नित्यता बतलाने के लिये सम्पूर्ण गुणवाचक के सङ्ग करना क्रिया आती है। जैसा उस का पिता प्रतिदिन उस को मारा करता है। इस मार्ग से समस्त लोग आया जाया करते हैं ॥

दोनों गुणवाचकों के और भी व्यवहार प्रसिद्ध हैं। जैसे बिन समझे। बिन बात सुने। चण मात्र जाते। सांझ हुए। भोर होते। जाड़े के निकलते। जीते जी इत्यादि ॥

प्रत्येक सम्पूर्ण गुणवाचक भाषा के व्यवहार से परवर्ती बन जाते हैं और उन के साथ सम्बन्ध कारक आता है। जैसे लिये मारे लगे ॥

असमापिका क्रियाविशेषण वाक्य के विशेष के पीछे आता है क्योंकि कर्ता से कोई कार्य अथवा गति मिलाता है जो विशेषक की क्रिया के काल से पहिले वा समकालीन उपस्थित होय। जैसा उस ने यहां आके कहा। वह हम को देखके पहिचानेगा ॥

बहुधा क्रिया की जड़ असमापिका क्रियाविशेषण के लिये आती है और प्रत्येक भी एक कर्ता से यौगिक शब्द के बिना मिल सकते हैं। जैसे वह हाथ जोड़ शिर झुका दण्डवत कर बोला ॥

---

२ अनुमत्यर्थनियम ।

अनुमत्यर्थनियम से आज्ञा वा बिनती प्रगट होती है और जो निषेध करना होय तो नहीं शब्द इस नियम के साथ नहीं आता है परन्तु निषेधवाचक क्रियाविशेषण मत और न कहा जाता है। जैसा ऐसा मत करो। हम को मारियो मत। ऐसा न करो ॥

साञ्ज्ञिकक्रिया बहुधा इस नियम के अर्थ से आती है। जैसा किसी से न कहना। वहां न जाना ॥

एक क्रिया अर्थात चाहना के अनुमत्यर्थनियम का निज व्यवहार है कि चाहिये शब्द उचित अर्थ से गुणवाचक हो जाता है। जैसा यह तुम को नहीं चाहिये अर्थात् तुम को उचित नहीं है। और जो क्रिया इस के साथ आवे तो साञ्ज्ञिकक्रिया अथवा सम्पूर्ण गुणवाचक होगी। जैसा ऐसा करना नहीं चाहिये अथवा ऐसा किया नहीं चाहिये ॥

चाहो शब्द एक भिन्नार्थवाचक यौगिक शब्द हो जाता है। जैसा चाहो इस को लीजिये चाहो उस को अर्थात इस को अथवा उस को लीजिये ॥

३ स्वार्थनियम और आशंसार्थनियम ।

जब किसी ऐसे वृत्तान्त का जो सचमुच भूत अथवा भविष्यत किंवा वर्तमान में उपस्थित हुआ सीधा वर्णन करना होवे तब स्वार्थनियम में कहा जायगा । जैसा जब उस ने हम से भीख मांगी तब हमने उस को दिया और अब वह सन्तोष करता है । परन्तु थोड़े बिलम्ब के पीछे वह फिर भीख मांगेगा ॥

जब वृत्तान्त सचमुच उपस्थित नहीं हुआ परन्तु मन का कल्पित है अथवा उस में अनुमान वा शक्ति वा इच्छा वा सन्देह की भावना है तब आशंसार्थनियम में कहा जायगा। जैसा जो वह हम से भीख मांगता तो हम उसे दान देते । तब वह सन्तोष करता परन्तु थोड़े बिलम्ब के पीछे फिर भीख मांगता ॥

जितने वाक्यों में अभिलाष वा परिमाण कहा जाय अथवा जिस के आदि में परिमाणवाचक यौगिक शब्द कि अथवा जिस से आवे सो सब आशंसार्थनियम में रचे जायंगे । जैसे हमारी इच्छा है कि तुम्हारा भला करें । तुम को चाहिये कि हमारी इच्छा से आनन्दित रहो । हम ने उस को समस्त दशा बतलाई जिस से वह अच्छी रीति से समझे । इस को इतनी सामर्थ्य नहीं है कि अपनी इन्द्री को वश रक्खे ॥

जब यौगिक शब्द का अर्थ निष्केवल तुल्यवाचक है तब स्वार्थनियम उस के साथ आवेगा। जैसा वह ऐसा शीघ्र दौड़ा कि अकस्मात गिर पड़ा ॥

जब मेलवाचक है अर्थात निष्केवल दो वाक्यों को संयुक्त करता है तब वही नियम आवेगा जो वाक्य के अर्थ में प्रयोजक होवे । जैसा उसने कहा कि मैं जाऊंगा । हमने ऐसा समझा कि जो उस को अच्छा लगता तो वह जाता नहीं तो नहीं ॥

साधारण वाक्य अर्थात जिस में सर्वविषयक वृत्तान्त होवे वह आशंसार्थनियम में कहा जायगा । जैसा पापी का माल वृथा जाय । जब जुआरी जीतता तब ऐसा मोहित हो जाता कि कोई उस के कपड़े उतार लेता तो भी उस को ज्ञान नहीं होता ।

३ मिश्रित क्रिया ।

हिन्दी भाषा में प्रत्येक क्रिया अनेक प्रकार से आपस में युक्त होके नवीन अर्थ को उत्पन्न करती हैं । जैसा

१	अवधारणबोधक	मार डालना	खाय जाना ॥
२	शक्तिबोधक	बोल सकना	कर सकना ॥
३	पूर्णताबोधक	खाय चुकना	लिख चुकना ॥
४	शीघ्रताबोधक	मारा चाहना	आने चाहना ॥
५	आरम्भबोधक	सीखने लगना	पढ़ने लगना ॥
६	अवकाशबोधक	जाने देना	चलने पाना ॥
७	नित्यताबोधक	चलते रहना	बकते जाना ॥

बोलना चालना । देखना भालना । चलना फिरना ॥

७ वाक्य में शब्दों का अनुक्रम ॥

साधारण रीति से वाक्य में शब्दों का अनुक्रम इस प्रकार का है ॥

१ विशेष पहिले आता है विशेषक पीछे । जैसे देवदत्त पढ़ता है ॥

२ विशेष के सम्बन्धी सब एकही सङ्ग आते हैं और विशेषक के सम्बन्धी शब्द भी एकही साथ । जैसे बुद्धिमान बालक विद्या में बहुत तत्पर रहता है ॥

३ गुणवाचक शब्द सञ्ज्ञा के आगे आता है और सम्बन्धकारक परवर्ती और कर्त्ताकारक के आगे परन्तु इस रीति से कि विशेष और विशेषक अलग रहें। जैसे सुन्दर बालक। देवदत्त के लिये। गङ्गाधर का पुत्र ॥

४ विशेषक में कर्म पहिले आता है क्रिया पीछे । जैसे पण्डित छात्र को पढ़ाता है ॥

५ असमापिका क्रियाविशेषण भी जिस कारक को व्याप्त करता है उसी के पीछे आता है । जैसे देवदत्त पाठ को पढ़के गया। परन्तु बहुधा विशेषक के कर्मकारक के आगे आता है जैसे देवदत्त ने आकर पुत्र को देखा॥

६ दूसरे प्रकार का क्रियाविशेषण उस क्रिया के आगे आता है कि जिस की रीति बतलाता है। जैसा देवदत्त अच्छा पढ़ता है॥

७ जब विशेष एक ऐसा वाक्य है कि जिस के आदि में सम्बन्ध वाचक सर्वनाम आता है तब उस सर्वनाम का सम्बन्धी विशेषक के आदि में भी आता है। जैसे जो बालक बैठके विद्या को सीखे और सदा विद्या के अभ्यास में लगा रहे उस को पण्डित लोग भला जानते हैं॥

८ अवधारण के लिये कोई शब्द निज स्थान को छोड़के अपने वाक्य के आदि में आ सकता है॥

९ अनुमानवाचक वाक्य में अनुमान पहिले आता है परिमाण पीछे। जैसा जो तुम जाते तो वह कार्य सिद्ध होता॥

१० यौगिकशब्द नित्य अपने वाक्य के आदि में आता है॥

इति हिन्दी भाषा व्याकरण समाप्त॥